योग के नाम पर मायाचार

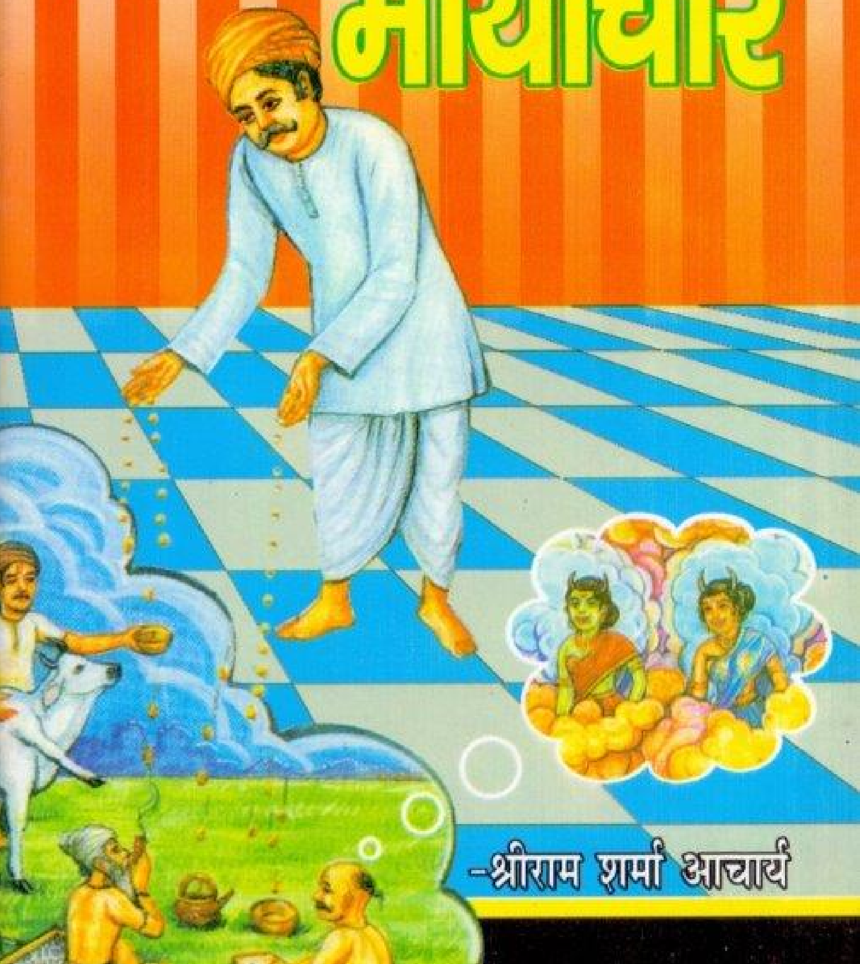

-श्रीराम शर्मा आचार्य

योग के नाम पर मायाचार

लेखकः
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : ९.०० रुपये

भूमिका

मायावी लोगों ने किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा है । उन्हें जहाँ कहीं भी थोड़ी-सी आड़ मिल जाती है छिप बैठते हैं । अनेकों चोर, उठाईगीरे, डाकू, ठग, दुराचारी, व्यसनी, नशेबाज एवं हरामखोर मनुष्य कानूनी पकड़ तथा जनता की आँखों से बचने के लिये पवित्र साधु वेष में जा छिपते हैं और इस आड़ में बैठे-बैठे मौज करते रहते हैं । खुराफाती दिमागों में यह विशेषता होती है कि वे चुप नहीं बैठ सकते । गुलछर्रे उड़ाने के लिये उनका दिमाग कोई न कोई तरकीब खोज निकालता है । सन्त वेश की आड़ में छिप बैठने से ही उन्हें संतोष नहीं होता वे आगे धावा बोलते हैं और जनता के भण्डार से यश तथा धन की लूट मचा देते हैं ।

ऐसे लोग अपना प्रधान हथियार चमत्कारों को बनाते हैं । योग शास्त्रों में ऐसे वर्णन आते हैं कि योगियों को ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होती हैं और अलौकिक चमत्कारी करतब दिखा सकते हैं । यह उक्ति न केवल पुस्तकों में वर्णित है वरन् जनसाधारण में इसका विश्वास भी बहुत गहरा जमा हुआ है । इस स्थिति से लाभ उठाकर धन और यश लूटने के लिये धूर्त लोग अपने आप को पहुँचा हुआ सिद्ध साबित करने का प्रयत्न करते हैं । चूँकि उनमें तप तो होता नहीं त्याग, वैराग्य, साधना और तपश्चर्या के बिना सच्ची सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती । ऐसे धूर्त लोगों में प्रत्यक्ष अनुभव में आये हुए दुराचारों में से कुछ को इस पुस्तक में प्रकाशित किया जा रहा है । आशा हैं कि यह पुस्तक धूर्तता और अन्धविश्वास के विनाश में सहायक सिद्ध होगी ।

--श्रीराम शर्मा आचार्य

योग के नाम पर मायाचार

सत्य की शोध के लिये सुदूर स्थानों में जो पर्यटन हमने किया है उसमें सत्पुरुष और सच्चे महात्माओं का अनुग्रह प्राप्त किया है, वहाँ धूर्त लोग भी कम नहीं मिले हैं । इन लोगों का वैभव काफी बढ़ा देखा है । हजारों-लाखों रुपयों की गुप्त-प्रकट सम्पत्तियाँ उनके पास देखी हैं । इन लोगों के रहस्यों का पता करना सहज काम नहीं है । भोले-भाले लोग तो इनके चंगुल में ऐसे फँस जाते हैं कि जन्म भर उनसे छूट नहीं सकते । काफी सतर्कता और सूक्ष्म बुद्धि द्वारा, बहुत दिन बारीकी के साथ निरीक्षण करने पर ही कुछ पता चल पाता है । हमें इस प्रकार के जो भेद मालूम हुए हैं पाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं ।

अब तक इन भेदों को हमने बहुत गुप्त रखा था । कारण यह था एक बार एक व्यक्ति से हम इन भेदों की चर्चा कर रहे थे, तो वह बहुत प्रभावित हुआ । मजाक में नहीं वरन् बहुत ही गम्भीरता से उसने कहा-'यदि आप इस प्रकार की दस-पाँच विद्यायें मुझे सिखा दें तो मैं एक-दो वर्ष में ही लाखों रुपये कमा सकता हूँ । उस वक्त हम चुप हो गये दूसरे दिन वह आदमी फिर हमसे बहुत गम्भीरतापूर्वक मिला और अपनी पूरी योजना बनाकर लाया । उसने कहा कि आप पाप पुण्य से डरते हैं तो आप अलग रहिये, मुझे वह सब सिखा दीजिये, आमदनी का आधा भाग मैं आपको देता रहूँगा । किसी को पता भी न चल पायेगा और आप कुछ ही दिनों में लक्षाधीश बन जायेंगे ।

इस प्रस्ताव ने हमारे मस्तिष्क में एक नयी सावधानी पैदा की, वह यह कि यदि इस प्रकार के भेदों को लोगों ने मालूम कर लिया तो धूर्त लोगों की पाँचों घी में होंगी । वे उसी रास्ते को

अपना लेंगे जिसे कि उन "सिद्ध" लोगों ने अपनाया था । इस विचार ने हमें बहुत सावधान कर दिया और हमने यह प्रतिज्ञा कर ली कि कभी किसी को यह बातें नहीं बतायेंगे । उस प्रस्ताव को करने वाले को भी हमने स्पष्ट मना कर दिया । जिन्हें हमारी यात्राओं के वर्णन मालूम थे ऐसे निकटवर्ती मित्रों ने भी ऐसी चमत्कारी कल्पनायें बताने का हमसे आग्रह किया, पर उन्हें भी अब तक कुछ नहीं बताया गया । अब तक ऐसे अनेकों अनुरोध समय-समय पर टाले जाते रहे हैं । किसी पर यह भेद प्रकट नही किये गये ।

इन धूर्तताओं के विरुद्ध दूसरी ओर हमारे मन में तीव्र घृणा एवं कड़े विरोध की भावना काम करती रही है । जिन लोगों के यहाँ ये पाखण्ड प्रयुक्त होते हैं उनका समय-समय पर काफी विरोध भी हर संभव उपाय से हमने किया है । यह इच्छा हमें बहुत दिनों से है कि जनता को इस दिशा में शिक्षित किया जावे ताकि वह ऐसे भ्रम और मायाचारों से बच सके । इस सम्बन्ध में काफी समय तक गम्भीर विचार करने और विज्ञ पुरुषों से सम्मति लेने पर अपने उस पूर्व निश्चय को बदलना पड़ा । गुप्त रखने से हमारे द्वारा नये जादूगर पैदा न होंगे यह ठीक है, पर जो लोग इस समय धूर्तता कर रहे हैं या लोग अन्य मार्गों से उन बातों को सीखकर भविष्य में मायाचार करेंगे उनकी रोक कैसे होगी ? इस दृष्टि से विचार करने पर यह मत स्थिर किया गया कि इन रहस्यों को सार्वजनिक रूप से जनता पर प्रकट कर दिया जाय । ऐसा करने से अनेक भोले-भाले लोग सावधान हो जायेंगे और तथाकथित सिद्धों के चंगुल में फँसने से पूर्व यह देख लिया करेंगे कि वे किसी के द्वारा अनुचित रीति से ठगे तो नहीं जा रहे हैं । दूसरी ओर धूर्त लोगों का भी रास्ता बन्द होगा । वे सोचेंगे कि यह सब बातें जनता पर प्रकट हो चुकी हैं, इसलिये हमारी पोल आसानी से खुल जायगी, यह भय उन्हें कुचाल छोड़ने के लिये मजबूर करेगा । इन बातों पर विचार करके इन पृष्ठों

में वे सब बातें प्रकट की जा रही हैं जिन्हें अब तक हमने सावधानी से छिपाये रखा था ।

किन्तु किसी को इन पंक्तियों से इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये कि योग साधना का कोई अलौकिक फल नहीं है या जितने भी दिव्य शक्ति सम्पन्न महात्मा हैं वे सभी धूर्त हैं, ऐसा हमारा अभिमत कदापि नहीं है । अलौकिक दिव्य पुरुष भी इस भूतल पर होते हैं और हैं । उनकी महिमा और महत्ता को कोई कम नहीं कर सकता । सत्पुरुषों, दिव्य आत्माओं तथा धूर्तों में एक अन्तर स्पष्ट है, उसे ध्यान में रखकर सत्–असत् का निर्णय आसानी से किया जा सकता है । सत् पुरुष सरलतम होते हैं, सबको वे अपने आत्मीयों की तरह प्यार करते हैं, निष्कपट और निस्पृह भाव से बात करते हैं । उनके यहाँ छिपाव की कोई बात नहीं होती । इसके विपरीत धूर्तों को अपनी माया छिपाने के लिये पग–पग पर दुराव एवं आडम्बर करना पड़ता है । जहाँ दुराव एवं आडम्बर हो तथा भेद रखा जाता हो वहाँ संदेह की काफी गुन्ज्ायश होती है । वहाँ सावधानी रखने की भी आवश्यकता होती है । पैसे का अनाप–शनाप खर्च, अनावश्यक बातों की भरमार, राजसी ठाठ–बाट, अमीरों जैसा आहार–विहार, आलस्य प्रमाद की अधिकता, तुच्छ विषयों पर विशेष चर्चा, आत्म प्रशंसा आदि बातें जहाँ अधिक दिखाई देती हों, वहाँ समझना चाहिये कि यहाँ कुछ दाल में काला हो सकता है । वहाँ पैर फूँक–फूँककर रखना चाहिये । जहाँ सादगी, सीधापन, सरलता, निष्कपटता एवं खुला दरबार हो वहाँ सचाई की स्थिति अधिक होती है । फिर भी दोनों ही स्थितियों में विवेकपूर्वक नीर–क्षीर को देखने की आवश्यकता है ।

गत बीस वर्षों में भारत के लगभग सभी प्रदेशों में कई बार आध्यात्मिक खोजों के सिलसिले में हमने भ्रमण किया है । अनेक भले–बुरे अपने ढंग के अनेकों विचित्र–विचित्र व्यक्तियों से हमारा

संपर्क हुआ है । उनमें से इस पुस्तक मे केवल ऐसे व्यक्तियों की कटु स्मृतियाँ लिखी जा रही हैं, जो योग के नाम पर चालाकी से अपना दम्भ चलाते थे । अन्य प्रकार के अनुभवों को आगे फिर कभी प्रकट करेंगे । इस पुस्तक के लेखों का प्रयोजन यह है कि पाठक सावधान रहें और बिना परीक्षा किये किसी नकली "सिद्ध" के चंगुल में न फँसें । अब हम पाठकों के सामने अपने कुछ अनुभव प्रस्तुत करते हैं ।

(१) सट्टा बताने वाले पीर

बंगाल प्रान्त के मैमनसिंह जिले में एक मुसलमान साधु की गुफा है । उन्हें सोफा पीर कहते हैं । सड़क से कोई डेढ़ मील दूर पर यह गुफा है । इन पीर साहब के बारे में दूर-दूर तक यह प्रसिद्ध है कि वे जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं उसे दड़े के ठीक नम्बर बता देते हैं । कलकत्ता के आस-पास दड़ा लगाने का बड़ा चलन है । मंगल और शुक्र को दड़े वालों के यहाँ नम्बर खुलता है और जिसका दाव आ जाता है उसे एक के बदले सौ रुपये मिलते हैं । दड़ा लगाने का प्रचार बड़े शहरों से लेकर छोटे ग्रामों तक में है । दड़े के नम्बर पूछने के लिये इन पीर साहब के पास सैकड़ों आदमियों का मेला लगा रहता है । जो भी जाता है भेंट पूजा लेकर जाता है । मेवे, मिठाई और फलों का ढेर लगा रहता है । पीर साहब ने सैकड़ों आदमियों को अब तक दड़ा बताया है, वे जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं उसे निहाल कर देते हैं । ऐसा विश्वास पीर साहब के प्रायः सभी मुरीद मन में धारण किये रहते हैं ।

बड़ी कठिनता से उस मुश्किल रास्ते को पार करके हम वहाँ पहुँचे । दूर देश से आये हुए एक प्रतिभाशाली, विद्वान्, ब्राह्मण कुमार का समाचार उनके शिष्यों ने पीर साहब को सुनाया । उन्होंने हमारे ठहरने और भोजन-विश्राम की समुचित व्यवस्था कर दी । दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंन भेंट के लिये बुलाया । वार्तालाप करके वे

मुग्ध हो गये । एकान्त वार्ता के लिये वे बहुत ही कम समय लोगों को देते थे, पर मुरीदों की परवाह न करके दो–ढाई घण्टे वे हमसे बातें करते रहे । पहली ही मुलाकात में पीर साहब बहुत प्रभावित हो गये । वे सोचने लगे यह व्यक्ति मेरा शिष्य बन जावे तो मेरी पूजा, प्रतिष्ठा और मान्यता में अनेक गुनी वृद्धि हो सकती है । अपने इन विचारों को वे मन में रोक न सके । दूसरे दिन दबे शब्दों में अपने मन की बात प्रकट कर दी और साथ ही शिष्य होने का भारी आर्थिक प्रलोभन भी दिया ।

अपना उद्देश्य दूसरा था । सत्य की शोध, तथ्य की जानकारी एवं आत्मा का कल्याण यही अपनी आकांक्षा थी । धन, यश या ऐश्वर्य की इच्छा से पीर साहब के पास जाने का प्रयोजन न था । अभीष्ट प्राप्ति के लिये पीर साहब के पास ठहरना था और सत्य का पता लगाना था । उत्तर में उनसे इतना ही निवेदन किया कि अभी मुझे आये तीन ही दिन हुए हैं । कुछ समय अपने पास रहने का और विचार करने का मुझे अवसर दें तो ही कुछ निश्चित उत्तर दे सकूँगा । पीर साहब सहमत हो गये ।

अब नित्य उनके पास बैठना अपना कार्यक्रम था । सारे दिन होती रहने वाली चर्चा को एकाग्रमन से किन्तु उपेक्षित मुख मुद्रा के साथ सुनता था । कभी–कभी पीर साहब को प्रसन्न रखने वाली फुलझड़ियाँ बीच–बीच में छोड़ देता था, जिससे उनकी कृपा अपने ऊपर ज्यों की त्यों बनी रहे । करामात का रहस्य अपने को जानना था, समस्त चित्त वृत्तियाँ उसी की खोज में लगी रहतीं ।

तीन सप्ताह के निरन्तर सूक्ष्म पर्यवेक्षण से वास्तविकता का पता चल गया । पीर साहब के पास कोई सिद्धि न थी । वे दड़े का नम्बर पूछने के लिये आये हुए मुरीदों को मुट्ठी भर कोइ चीज देते थे जैसे फूल, बतासे, मेवे आदि । मुरीद उन्हें चुपचाप गिनते और वही संख्या मान लेते । कभी–कभी कुछ गिनती सूचक वाक्य भी

कहते रहते जैसे "सारंगपुर यहाँ से तेतीस मील है। एक दिन यहाँ से सत्रह हिरनों का झुण्ड निकला था, वह शाल पचपन रुपये की होगी आदि।" बैठे हुए व्यक्ति उन अंकों से दड़े के नम्बर का अर्थ निकालते और दाव लगाते थे।

पीर साहब इस बात का ध्यान रखते थे कि लोगों को भिन्न-भिन्न नम्बरों का संकेत किया जावे। दड़े में एक से लेकर सौ तक नम्बर आते हैं। मान लीजिये पाँच सौ दर्शक आये। उनको अलग-अलग नम्बर बताये। पाँच सौ आदमियों को सौ नम्बर अलग-अलग बताये जायें तो पाँच आदमियों का नम्बर खुलेगा। वह प्रतिदिन पाँच आदमियों को जरूर बताया गया होगा। इस प्रकार सात दिन में कम से कम ३५ आदमियों का नम्बर जरूर निकलेगा। वे ३५ आदमी भविष्य में अधिक लाभ की आशा से पीर साहब की भरपेट प्रशंसा करते और उन्हें भेंट-पूजा चढ़ाते। उन ३५ आदमियों की सफलता का ढोल चारों ओर पिट जाता। शिष्य लोग तिल का ताड़ बनाते, ३५ की जगह पर तीन सौ गिना देना उनके बायें हाथ का काम है। लोगों को मिला-पाँच, बताये दस हजार। इस प्रकार उस अज्ञ समुदाय में तिल का ताड़ बनाने वाली गप्पें फैला दी जातीं और पीर साहब की मान्यता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती। दूर-दूर से बम्बई, कलकत्ता, करांची, मद्रास तक के सटोरिये, दड़े बाज, तेजी-मन्दी, दड़ा-सट्टा, फीचर, लाटरी आदि के लिये पहुँचते। उनके पट्ट शिष्य ऐसे लोगों के कान भरने, पट्टी पढ़ाने, प्रभावित करने और अच्छी भेंट-पूजा पाने में बड़े चतुर थे। दिन भर चाँदी कटती रहती। शिष्य लोगों के पौबारह रहते।

जिन अधिकांश लोगों के पैसे व्यर्थ ही डूब जाते, जिन्हें कुछ न मिलता, वे बेचारे पेट मरोड़कर चुप हो जाते। भाग्य का फेर, बुरे दिन, पीर साहब की सेवा-पूजा की कमी आदि अनेकों कारण

असफलता के सोच लेते और फिर उसी आशा तृष्णा में भटकते रहते । "शायद अबकी बार हमें मिले" इसी आशा में सैकड़ों वर्षों से उलझे हुए थे, काफी नुकसान उठा चुके थे, पर अपने दुर्भाग्य की बात किसी से कहने का उनमें साहस न होता था । दड़े के व्यापारी पीर साहब की कृपा से मालोमाल हो रहे थे । नये नये अड्डे खुलते जाते थे । पीर साहब की महिमा बढ़ाने और प्रशंसा करने के लिये उन लोगों ने वेतन भोगी एजेण्ट रख छोड़े थे जो दूर-दूर तक पीरजी की प्रशंसा करके 'नये दाव लगाने वाले' तैयार करते थे । इस वृद्धि से दड़े व्यापारी मालोमाल हो रहे थे ।

यह सब दृश्य देखकर आत्मा तिलमिलाने लगी । जनता का मूल्यवान समय, हजारों रुपया प्रतिदिन नष्ट होता था । जुआखोरी की शैतानी आदत बढ़ती थी । मिथ्या भ्रम और पाखण्ड फैलता था । अपना उद्‌देश्य सत्य की शोध था, यहाँ शैतान का साम्राज्य छाया हुआ था । एक दिन अस्वस्थता का बहाना करके बिस्तर बगल में दबाकर वहाँ से चल दिया । पीर जी को एक अच्छा शिष्य हाथ से निकलने का दुःख हुआ । उन्होंने फिर आने का आग्रह करते हुए विदा दी । मैं दड़ा बताने की करामात को नमस्कार करके आगे के लिये चल दिया ।

(२) सोना बनाने वाले सिद्ध

चम्पारन जिले में ऐसे महात्माओं का नाम सुना था जो सोना बनाने की विद्या जानते हैं । उनके बारे में यह कहा जाता था कि वे किसी से माँगते कुछ नहीं । जब शिष्य मण्डली के लिये तथा अपने खर्च के लिये रुपयों की जरूरत पड़ती है तो थोड़ा-सा सोना बना लेते हैं और उस सोने को बाजार में भेजकर बिकवा देते हैं । उसी रुपये से उनका सब काम चलता है । खोजते-खोजते हम इन सिद्धजी महाराज के पास पहुँचे । देखने में वे तेजस्वी थे । भरा हुआ चेहरा, चमकीली आँखें, उठा हुआ शरीर, घनी दाढ़ी वाला

स्वरूप जटाओं के बीच बड़ा सुहावना मालूम पड़ता था। उनकी जमात में कोई आठ–दस उनके निजी शिष्य थे, दस–बारह सेवक उनके साथ थे, मैं भी इसी जमात में शामिल हो गया। अपनी विद्या, वाक्‌पटुता एवं व्यवहार कुशलता से वे लोग थोड़ी ही देर में प्रभावित हो गये और खुशी–खुशी अपने साथ रख लिया।

इन सभी लोगों का रहन–सहन काफी खर्चीला था। भोजन में मेवे–मिठाई, दूध–रबड़ी, भाँग–ठण्डाई की धूम रहती थी। दोनों वक्त भंग छनती थी जिसमें २०) रुपये प्रतिदिन से कम खर्च न होता होगा। जमात के हर आदमी के ऊपर दो–तीन रुपया रोज से कम का खाने का खर्च न था। गाँजा और चरस की चिलमें बराबर चलती रहतीं। इस जमात में कभी कोई सामूहिक सत्संग या वार्तालाप होते हमने न देखा वरन् बराबर कानाफूँसी होती रहती। कोई किसी को अलग बुलाकर कान पर मुँह रखकर खुसपुसाता, कोई किसी के कान में बात करता। दिन भर गुप्त मंत्रणायें होती रहतीं।

एक–दो दिन रहने के बाद ही सब लोगों से अपनी आत्मीयता बढ़ने लगी और गुप्त मंत्रणाओं और कानाफूँसियों के लिये हमें भी पात्र मान लिया गया। पहले दिन हमने समझा था कि सोना बनाने के वैज्ञानिक भेदों पर यह लोग मंत्रणा करते होंगे, इसलिये इनकी वार्ता में प्रवेश पाने के लिये हमें अत्यधिक चतुरतापूर्ण प्रयत्न करने पड़ेंगे, पर दूसरे दिन यह भ्रम दूर हो गया। इस गुप्त बातचीत का अर्थ केवल महात्माजी की प्रशंसा तथा उनके सोना बनाने की योग्यता की पुष्टि करना था। यह वार्तायें प्रधान शिष्यों द्वारा प्रचलित की जाती थीं। वे ऐसी घटनायें कथा रूप में गढ़ते थे जिनमें यह बताया जाता था कि "इन सिद्धजी ने अमुक बार इस प्रकार इतना सोना बनाकर अमुक शिष्य को दिया था। अमुक दिन इतना सोना बनाया था। उस दिन बनाने में जो चीजें डाली थीं उसमें से अमुक को तो हम जानते हैं,

अमुक रंग की दवा का नाम मालूम नहीं । इन महात्माजी के गुरुजी और भी अधिक पहुँचे हुए थे । वे चिलम के छेद में ताँबे के पैसे की रोक रखते थे और ऊपर से एक बूँटी गाँजे की तरह रखकर चिलम पीते थे, बस इतने में ही ताँबे का पैसा सोने का हो जाता था । उस सोने के पैसे को गुरुजी उसी भगत को दे आते थे जिसके यहाँ आतिथ्य स्वीकार करते थे । यह वर्तमान गुरुजी उतने पहुँच हुए नहीं हैं, इनको सोना बनाने में बहुत-सा सामान इकट्ठा करना पड़ता है तब कहीं कार्य पूरा होता है ।" ऐसी ही अनेक बातें उस कानाफूँसी का विषय होती थीं ।

सिद्धजी के एक शिष्य ने कानाफूँसी करते हुए मुझसे कई बातें कहीं । उसने बताया कि (१) कलकत्ता के अमुक सेठ को महात्माजी ने वह विद्या सिखा दी है, वह अरबों रुपयों का लाभ कर चुका है । (२) एक बार बम्बई का अमुक सेठ देवालिया होने जा रहा था, वह दौड़ा हुआ आया महात्माजी के चरणों में गिरकर लाज बचाने की बात कही । महात्माजी ने दया करके उस सेठ को बीस लाख रुपये का सोना बनाकर दिया और शर्त कर ली कि इस समय तो अपना काम चलाले बाद में इस रुपये को धर्म कार्य में लगा दे । प्रतिज्ञा के अनुसार सेठ अब तक बराबर इतने रुपये साल का सदावर्त साधु-महात्माओं को बाँटता है । (३) मद्रास प्रान्त में एक बड़ा भारी मन्दिर बन रहा है जिसका खर्च इन महात्माजी ने ही दिया है । (४) यह महात्माजी अब तक कई आदमियों को यह विद्या सिखा चुके हैं, पर साथ ही यह कह देते हैं कि यदि उसने किसी को बताई तो उसी क्षण उसकी मृत्यु हो जायगी । एक आदमी की प्रतिज्ञा तोड़ने पर तुरन्त मृत्यु हो भी चुकी है । (५) महात्माजी से इस विद्या को वही ले सकता है जो उनको पूरी तरह से प्रसन्न करने के लिये तन-मन-धन की सेवा करेगा । जब वे पूरी भक्ति देख लेते हैं तभी प्रसन्न होते हैं ।

यह बातें इस ढंग से कही गयीं थीं मानों वह व्यक्ति हमारा बड़ा हितैषी हो और हमारे लाभ के लिये, हमारी अभीष्ट पूर्ति में सहायक बनने के लिये कह रहा हो । इन्हीं बातों को वे शिष्य लोग बाहरी आगन्तुक व्यक्तियों में गुपचुप रुप से फैलाते थे । आगत व्यक्ति अन्य आगत व्यक्तियों से कहते थे । इस प्रकार अनेकों मुखों से गुप्त रूप से एक ही बात की पुष्टि होते देखकर नये व्यक्ति के मन में पूरा और पक्का विश्वास बैठ जाता था कि यहाँ सोना अवश्य ही बनाया जाता है और प्रयत्न करने पर मुझे भी वह विद्या प्राप्त हो सकती है । यह विश्वास मन में बैठ जाने पर वह व्यक्ति बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार हो जाता था । बिना परिश्रम लाखों-करोड़ों रुपये पाने का लोभ साधारण लोभ नहीं है । इतने बड़े लाभ के लिये मनुष्य सहज ही अपना बहुत-सा समय और धन खर्च करने को तैयार हो जाता है । लोभ से आतुर हुए मनुष्य की विवेक बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, वह तर्क-वितर्क करके वास्तविकता का परीक्षण करने में असमर्थ हो जाती है । इस कानाफूँसी के प्रचार और षड्यंत्र की वास्तविकता को न समझने वाले अनेकों आँखों के अन्धे और गाँठ के पूरे मनुष्य वहाँ पहुँचते थे और अपना पैसा महात्माजी को प्रसन्न करने के लिये होली की तरह फूँकते थे । भक्त मण्डली में होड़-सी लगी रहती थी कि देखें कौन अधिक खर्च करे । इस होड़ाहोड़ी में एक से एक बढ़िया राजसी ठाठ-बाट वहाँ जमा होते थे ।

विश्वास और अविश्वास की भावनायें मेरे मन में द्वन्द मचा रही थीं । यदि सोना बनाना इन्हें आता है तो यह विद्या मुझे भी प्राप्त करनी चाहिये । यह लोभ अपने लिये भी कम न था । घर से ब्रह्म परायण होने निकला था, पर इस तथाकथित 'सोने की खान' में वह इच्छा धुँधली हो गयी । यदि यह विद्या मिल गयी तो धन की प्रचुरता होने पर कैसे बड़े-बड़े काम करेंगे, ऐसी कल्पनायें इतने

विशाल आकार में उत्पन्न होने लगीं जिनके पैर जमीन पर थे, शिर आकाश में । इस सोने की खान में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से अपनी समस्त चतुराई और जागरूकता को एकत्रित करके मैं कार्य करने लगा ।

उस अवसर की बड़ी प्रतीक्षा थी जब महात्माजी सोना बनायें और अपनी आँखों से उसे बनता देखकर कम से कम यह विश्वास कर सकूँ कि इनके पास यह विद्या वास्तव में है या नहीं । ऐसे अवसर दो–चार महीने में कहीं एक बार आते थे । मुझे तीन महीने वहीं ठहरना पड़ा, तब कहीं एक अवसर ऐसा आया । पारा, हडताल, ताँबा, गंधक तथा अन्य कुछ जड़ी–बूटियाँ जमा की गयीं । एक गुप्त स्थान पर भट्टी तैयार की गयी । वह चीजें कढ़ाई में डालकर आग जला दी गयी । मसाले पकते रहे, कुछ देर बाद हम सब को हटा दिया गया और महात्माजी तथा उनके प्रधान शिष्य कढ़ाई में कुछ उलट–पुलट करते रहे । कुछ चीजें उसमें डालते तथा निकालते रहे ऐसा हमने दूर स्थान से देखा । रात को सबके सामने कढ़ाई उतारी गयी । करीब तीन तोले सोना निकला । दूसरे दिन उसे बेचने बाजार भेज दिया गया । जो बेचने गया था उसने करीब १००) रु. तोले का बाजारू मूल्य महात्माजी के सामने रख दिया ।

इस क्रिया को देखकर अन्य श्रद्धालु भक्तों के मन में महात्माजी के लिये अनेक गुनी श्रद्धा उमड़ पड़ी । उस श्रद्धा के जोश में जो छिद्र और संदेह थे वे उनकी दृष्टि तक पहुँचते ही न थे । पर अपने में न तो अन्ध श्रद्धा थी और न संदेहों के प्रति उपेक्षा भाव । दृष्टि दौड़ाने पर संदेह हुआ कि जब हम लोगों को हटाया गया था तब ताँबा निकाल कर सोना डाल दिया होगा । निर्णय तक पहुँचने के लिये उनके प्रधान शिष्य से घनिष्ठता कायम की गयी । वह लड़का कोई इक्कीस–बाईस वर्ष का था । दस वर्ष से महात्माजी की सेवा में था । उनकी सभी गुप्त प्रकट बातों से

भलीभाँति परिचित था । मैंने ताड़ने की कोशिश की कि इसे किस प्रकार अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है । लड़का तरुणाई में प्रवेश कर रहा था, उसके चेहरे और हाव-भावों से प्रकट होता था कि काम वासनायें उसे बुरी तरह बेचैन किये हुए हैं । उसकी इस कमजोरी को ताड़कर मैंने एक दिन एकांत में लेजाकर चुपके से उससे कहा कि आप चाहें तो एक अत्यन्त रूपवती तरुणी से आपका विवाह करा सकता हूँ । पहले तो वह चौंका, पर पीछे अपनी नेक नीयती, उसके प्रति अपने प्रेम एवं विश्वास प्रकट करने पर वह तैयार हो गया । पहली बार कहने पर उसे भय था कि मेरे मन की बात प्रकट हो जाने पर महात्माजी की कृपा और यहाँ के ऐश-आराम से हाथ धोना पड़ेगा, पर पीछे जब उसके मन में कुहराम मचाने वाली कामेच्छा को तृप्त करने का लोभ सामने आया तो उसके आगे उसे शिष्यता का वैभव तुच्छ जँचने लगा । विवाह का प्रलोभन देने वाला मैं उसे देवता सा जँचने लगा । वह मुझे प्रसन्न करके मेरी सहायता से सुन्दरी वधू प्राप्त करने के लिये छाया की तरह पीछे-पीछे फिरने लगा ।

तीर निशाने पर लगा । उस प्रमुख शिष्य से आत्मीयता गाँठ लेने पर हम दोनों में अपनी अन्तरंग बातें कहने-सुनने का क्रम चलने लगा । एक दिन मैंने उससे महात्माजी के सोना बनाने का रहस्य पूछा । पुरानी आदत के अनुसार पहले तो वह कुछ झिझका पर पीछे हमारे प्रोत्साहन देने पर सारा भेद खोल दिया । उसने बताया कि महात्माजी सोना बनाना बिल्कुल नहीं जानते । बाजार से सोना मँगाकर कढ़ाई में डाल देते हैं और तौबे को सफाई के साथ निकाल लेते हैं । हम लोग ऐश-आराम पाने के लिये नवागन्तुक लोगों को प्रशंसा करके एवं कल्पित घटना बताकर प्रभावित किया करते हैं । नये आदमी वर्ष-दो वर्ष टहल करते और धन लुटाते हैं । परन्तु उन्हें बताया कुछ नहीं जाता । मंत्र सिद्धि, बूटी की

तलाश आदि बहाने करके उन्हें लटकाये रखा जाता है । गुप्त बातें, अधिक लाभ की बातें कानों कान खूब फैलती हैं, इसलिये जहाँ पुराने भक्त टूटते हैं, वहाँ नये भक्त आते हैं । इस प्रकार यह ढर्रा चलता रहता है । महात्माजी को प्रतिष्ठा, पूजा, यश और ऐश्वर्य मिलता है । उनके सहारे हम लोग चैन की छानते और मस्त रहते हैं, यही सोना बनाने का रहस्य है ।

यह अत्यन्त विश्वस्त गवाही थी इसके बाद और कुछ सबूत लेने की आवश्यकता न थी । उस प्रधान शिष्य को साथ लेकर सोना बनाने वाले महात्मा को नमस्कार करके मैं चल दिया । चलते समय उपस्थित लोगों से भण्डाफोड़ भी किया पर अन्ध श्रद्धा के तूफान में हमारा विरोध तिनके की तरह बह गया । किसी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया । उल्टा नास्तिक करार दिया गया । उस प्रधान शिष्य का अपने वचनानुसार विवाह कराके और उसे एक कमाऊ धन्धे में लगाकर आगे चल दिया ।

(३) त्रिकालदर्शी शाक्त

भरतपुर रियासत के एक गाँव में देवी के मठ पर एक तांत्रिक महोदय रहते थे, जिनके बारे में दूर-दूर तक यह प्रसिद्ध था कि उन्होंने देवी को सिद्ध कर लिया है । भगवती दुर्गा उन पर प्रसन्न हैं और उन्हें त्रिकालदर्शी होने का वरदान दिया है । जो आदमी उनके पास जाता है, उसके मन की बात जान लेते हैं और जो बात पूछने की इच्छा से कोई मनुष्य उनके पास जाता है उसे बिना कुछ पूछे ही सब कुछ बता देते हैं । इन शक्ति सिद्ध की कीर्ति दूर-दूर तक फैल रही थी । उनके पास दसियों आदमी रोज जाते थे और अपने बारे में बिना बताये अनेक गुप्त बातें सुनकर पूर्ण प्रभावित होकर उनके सच्चे भक्त बनकर लौटते थे ।

अपनी भी इच्छा उनके दर्शनों की हुई । आवश्यक सामान साथ लेकर चल दिये । रेलवे स्टेशन से कोई चार किलोमीटर दूर वह मठ

है । रास्ता बड़ा ऊबड़-खाबड़; जंगली और पथरीला है । इस रास्ते में सिंह तो नहीं पर भेड़िये और वाघ प्रायः मिलते हैं । इसलिये अकेला आदमी प्रायः ठिठकता है और यह देखता है कि कोई साथी उधर जाने वाला मिले तो चलें । कारण कि लुटेरों का, हिंसक जानवरों का तथा छोटी पगडण्डियों के बीच रास्ता भूल जाने का भय बना रहता है । मैं स्टेशन के बाहर साथी की तलाश में बैठा हुआ इधर-उधर देख रहा था कि एक सज्जन कन्धे पर मोटी लाठी रखे, बगल में एक गठरी दबाये पास में आ खड़े हुए । मुझे बैठा देखकर ठिठक गये और गठरी में से चिलम निकाल कर तम्बाखू पीने की व्यवस्था करने लगे । चिलम सिलगा कर मेरी ओर बढ़ाते हुए उन्होंने मुझे भी पीने के लिये पूछा, मैंने विनयपूर्वक क्षमा माँगते हुए कहा कि मैं तम्बाखू नहीं पीता । मेरे मना करने पर वह मेरे समीप बैठ कर खुद धूम्रपान करते रहे ।

अब बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ । एक-दूसरे का परिचय पूछा गया । मालूम हुआ कि यह व्यक्ति धौलपुर रियासत का रहने वाला राजपूत है । प्राइमरी स्कूल तक पढ़ा है, घर में कुछ जेबर चोरी चले गये हैं उनका पता पूछने शाक्त महोदय के पास जा रहा है । यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि साथ मिल गया । वह पहले भी देवी के मठ पर कई बार जा चुका है, रास्ता उसका भलीभाँति देखा हुआ है, यह जानकर और भी अधिक तसल्ली हुई । हम दोनों साथ-साथ चल दिये ।

वह आदमी था तो देहाती, पर बातचीत में बड़ा निपुण था । मीठी जवान, हमदर्दी से भरी बोलचाल, बरबस दूसरों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी । हम दोनों साथ-साथ चले जा रहे थे, वह आप बीती अनकों को सुनाता जा रहा था, उसकी चोरी कैसे हुई, किस पर उसका शुवा है, आदि बातें उसने कहीं । उसकी बातें करीब एक-डेढ़ घण्टे चलती रहीं । इतनी देर में हम प्रयः दो-ढाई

कोस चल चुके थे । दोपहर हो चला, गर्मी के दिन थे, छायादार पीपल के पेड़ के नीचे कुँआ था, उसने गठरी में से लोटा और डोरी निकाल कर पानी खींचा, हम दोनों पानी पीकर पेड़ की शीतल छाया में सुस्ताने के लिये थोड़ी देर के लिये बैठ गये ।

अब हमारे साथी ने बातचीत का क्रम बदला, उसने अपनी कहने के बजाय हमारी बातें पूछना आरम्भ कर दिया । वह मुस्कराहट, आत्मीयता और उत्सुकता के साथ ऐसी मुद्रा के साथ मेरा परिचय और आने का कारण पूछने लगा । न बताना शिष्टाचार के नाते ठीक न था । सही बताना मैं चाहता न था क्योंकि मेरा परिचय और आने का कारण दोनों ही बड़े विचित्र थे । उसे समझाने में काफी कठिनाई पड़ती और मुझे बहुत माथा-पच्ची करनी पड़ती । पीछा छुड़ाने के लिये मैंने यों ही अंट-शंट बातें बतायीं । कहा–मैं अलीगढ़ का रहने वाला गौड़ ब्राह्मण हूँ, नाम मेरा रामचन्द्र है । एक मुकदमा लग गया है उसके बारे में पूछने आया हूँ । मुकदमे की बारीकियों के बारे में उसने अनेक प्रश्न पूछे--किस विषय पर मुक़दमा चल रहा है, किस अदालत में है, मुद्दाअलह कौन है, आपका वकील कौन है ? गवाह कौन-कौन हो चुके हैं आदि इसी प्रकार मेरे व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक जानकारी के सम्बन्ध में अनेकों बातें पूछीं । मैं मन ही मन अकारण की जिरह से खीज रहा था, पर शिष्टाचार के कारण उसे उल्टे-सीधे उत्तर देता चलता था । इस प्रकार चलते-चलते हम लोग दोपहर ढले तक मठ पर जा पहुँचे ।

मठ की बगल में एक बड़ा-सा पक्का दालान बन रहा था । सामने चबूतरा था, चबूतरे पर पीपल का छायादार पेड़, पेड़ से थोड़ा हटकर कुँआ था । जंगल में यह स्थान बड़ा भला मालूम पड़ता था । उस दालान में हम लोग ठहर गये । पूछने पर पता चला कि शाक्त महोदय दिन-रात मठ में साधना में रत रहते हैं और

प्रातःकाल निकलते हैं । उसी समय आगन्तुकों से भेंट करते हैं । रात हमें उस दालान में रहकर काटनी थी । उसमें हमारे जैसे और आठ–दस आदमी ठहरे हुए थे । पूछने पर मालूम हुआ कि सभी अलग–अलग स्थानों के हैं और अपनी किसी कठिनाई में इन सिद्ध पुरुष की सहायता लेने आये हैं । इतना जान लेने के बाद मैं पीपल के पेड़ के छाया में चबूतरे पर दरी बिछाकर लेट गया ।

जो व्यक्ति उस दालान में ठहरे हुए थे उनमें आपसी बातें हो रहीं थीं । सब लोग आपस में अपनी–अपनी दुःख गाथायें कह रहे थे । मैं सोना चाहता था पर उन ठहरे हुए लोगों की कौतूहलपूर्ण गाथाओं को सुनने में ऐसा मन लगा कि नींद न आ सकी । इसे सुनने में रस आता था, पर एक बात बहुत बुरी लगती थी कि उनमें से दो–तीन आदमी बाकी लोगों की बातें पूछने में बेतरह पीछे पड़े हुए थे । पूछने योग्य और न पूछने योग्य सभी बातें पूछ रहे थे । अपरिचित या नवीन परिचय के व्यक्ति से जो पूछताछ की जाती है उसकी एक मर्यादा होती है, अत्यन्त निजी बातों को कुछ घण्टे के परिचय मात्र के आधार पर पूछना सभ्य समाज में अशिष्टता समझी जाती है, पर यह लोग उस अशिष्टता की परवाह न करके ऐसे चिपटे हुए थे मानों उनके पेट में से हर एक बात पूछने पर तुले हुए हों ।

सन्ध्या होते–होते मैं उठा, शौच–स्नान से निवृत्त हुआ । थैले में से भोजन निकाला और कुँए की मुण्डेर पर बैठकर खाया और वहीं चबूतरे पर बैठ गया । रात काटनी थी । शाक्त महोदय से तो रात को मिलने की संभावना थी ही नहीं । जो मुझे बहुत अखरते थे, उन पूछने वालों में से एक ने मुझे भी आ घेरा और निजी बातों की पूछताछ करने लगा । मन ही मन मुझे झुँझलाहट आयी कि ये लोग ऐसी अनाधिकार चेष्टा क्यों करते हैं ? एक बार मन में आया कि फटकार दूँ, पर दूसरे ही क्षण एक दूसरा विचार प्रकट

हुआ–यहाँ जंगल का मामला है, रात इनके साथ ही बितानी है, झगड़ा करने से कोई विपत्ति आ सकती है, अपना कोई सहायक नहीं । इसलिये इन्हें नाराज करना ठीक नहीं । इसलिये मैं उनके प्रश्नों का गलत–सलत उत्तर देकर पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करता रहा । अधिक देर हो जाने पर नींद आने का बहाना कर मैं लेट गया । कुछ देर आँख बन्द किये रहने पर नींद आयी, और जब आँख खुली तो सबेरा था ।

साथी लोग मुझसे बहुत पहले उठकर नित्य कर्म से निवृत्त हो चुके थे । मैं भी जल्दी–जल्दी सब काम से निवृत्त हुआ । सूर्योदय होते ही शाक्त महोदय देवी के मठ में से निकले । स्थूल शरीर, माथे पर त्रिपुण्ड, लाल रेशमी धोती, बढ़े हुए बाल, चढ़ी हुई आँखें, देखने में डरावनी सूरत लगती थी । बड़ा–सा बिछौना बिछा दिया गया । सब लोग बैठ गये । उन सिद्ध पुरुष के लिये चौकी बिछा दी गयी । वे उस पर विराजमान हो गये । कुछ देर तक सब लोग चुपचाप बैठे रहे । सन्नाटे को चीरते हुए उन शाक्त महोदय ने हम लोगों में से एक का नाम लेकर पुकारा । वह हाथ बाँधकर खड़ा हो गया । अब उस खड़े हुए व्यक्ति का सारा इतिहास वे शाक्त महोदय बताने लगे । ऊपर पेड़ की ओर उनकी दृष्टि थी, भावभंगिमा ऐसी बनाते जाते थे मानो पेड़ के ऊपर कोई देवता बैठा हो और वह उनसे कुछ कह रहा हो और जो बातें वे देवता से सुनते हों वही बातें वे कह रहे हों । कभी–कभी अपनी भूल का बहाना करके देवता से फिर दुबारा उस बात को पूछते और अपनी गलती को दुरुस्त करते । इस प्रकार जो व्यक्ति पुकारा गया था उसका गाँव, नाम, घर की बनावट, पारिवारिक परिचय, अन्य गुप्त प्रकट बातें, घर से यहाँ तक आने का वृत्तान्त, यहाँ आने का प्रयोजन आदि अनेकों बातें सविस्तार उन्होंने बतायीं और जिस काम के लिये आया था, उसके सम्बन्ध में भविष्यवाणी की । जो बातें बतायी गयी थीं

शत-प्रतिशत सही थीं। बेचारा वह व्यक्ति श्रद्धा से गद्गद् हो गया। ऐसा त्रिकालदर्शी सिद्ध उसकी दृष्टि में ईश्वर के बराबर था। जो कुछ भेंट-पूजा लाया था उससे अधिक उसने सिद्ध महोदय के सामने रख दिया। अब दूसरों का नम्बर आया। जिसका नाम पुकारा जाता वह खड़ा होता। पीपल पर बैठे हुए अदृश्य देवता से वे बातें करते जाते और खड़े हुए व्यक्ति का नाम, धाम, पता, परिचय, अनेक गुप्त-प्रकट बातें, आने का उद्देश्य बताते थे तथा आगन्तुक की मनोवांछा के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते या कठिनाई का उपाय बताते। वह व्यक्ति श्रद्धा से नत होकर भेंट चढ़ाता और उठकर चला जाता। सभी लोगों के सम्बन्ध में शत-प्रतिशत बातें सच बतायी जा रही थीं। जिससे श्रद्धा और विश्वास के अटूट भाव सबके मन में जमते थे। मैं अनेक बार ठगा गया था, अनेकों की धूर्तता ताड़ चुका था, पर बिना प्रश्नकर्त्ता के एक शब्द मुख से बोले इस प्रकार सारी बातें बता देने वाला अपने ढंग का अनौखा शाक्त था। उसकी सिद्धि के सम्बन्ध में मेरे मन में भी श्रद्धा जागने लगी।

मैं पीछे बैठा था, मेरा नम्बर अन्त में आना था। जब अकेला मैं रह गया तो पुकारा गया-"रामचन्द्र !" मैंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई पर दूसरा कोई व्यक्ति वहाँ नहीं था, मैं अकेला ही था। शाक्त ने आँखें तरेर कर कहा-क्या सो रहे हो, मैं तीन आवाज दे चुका हूँ सामने नहीं आते। मैं हड़बड़ा कर उठा और अन्य लोगों की भाँति हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। देवता से पूछने और मुझे मेरे सम्बन्ध में बताने का क्रम चलने लगा, पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब देखा कि मेरे सम्बन्ध में एक भी बात सच नहीं बतायी जा रही है। सबकी सब गलत हैं। हैरानी से मेरे माथे पर पसीने की बूँदें आ गयीं। जब सब लोगों की सब बातें सच बतायी जा चुकी हैं तो मेरे सम्बन्ध में यह एकदम उल्टा क्यों हो

रहा है ? इस हैरानी को चीर कर एक बात याद आयी । रेल्वे स्टेशन से साथ आने वाले आदमी को जो बातें मैंने बिल्कुल गलत बतायीं थीं वे ही बातें सिद्ध महोदय ज्यों की त्यों दुहरा रहे हैं । मैंने अपना गलत नाम "रामचन्द" स्टेशन से साथ आने वाले साथी को बताया था । अब मैं समझा कि शाक्त महोदय के त्रिकालदर्शी होने का क्या रहस्य है । उनके गुर्गे आगन्तुकों के पीछे लग जाते हैं और उनसे भेद पूछकर शाक्त को चुपचाप बता देते हैं और दूसरे दिन वह उन्हीं को ग्रामोफोन के रिकार्ड की तरह दुहरा देता है ।

मेरे सम्बन्ध सभी बातें बिल्कुल गलत बतायी जा रही थीं, इनके कारण जो हैरानी थी उसका समाधान हो जाने पर मुस्कराहट की एक हल्की सी लहर दौड़ गयी । मुझे प्रसन्न देखकर शाक्त भी अचकचा रहा था । अब प्रसन्न मुद्रा देखकर उसे संतोष हुआ । अन्त में उसने पूछा–'काठ की तरह क्यों खड़े हो, मैंने जो बताया है वह ठीक है या नहीं !" मैं बिना उत्तर दिये बैठ गया । उसने फिर पूछा–बोलते क्यों नहीं ? मैंने नया बहाना बनाया । हाथ–पैरों को कँपाते हुए कहा–महाराज मुझे "गुंगबाय" का रोग है, कभी–कभी मेरा मस्तिष्क बिल्कुल बेकाम हो जाता है, जब बीमारी का दौरा होता है तो कानों में सनन–सनन होने लगती है । मुझे आज बीमारी का दौरा हो गया है । आपने जब नाम पुकारा तो उसे भी न सुन सका और जो कुछ आपने कहा है वह भी कुछ समझ में न पड़ा । अब कृपा कर एक दिन ठहरने का अवसर और दीजिये । बहुत दूर से आया हूँ । कल आपकी कृपा से लाभ अवश्य उठाऊँगा । अपने इतनी देर के परिश्रम को बिना लाभ का जाते देखकर शाक्त अप्रसन्न हुआ, मुझे नाराजी और तिरष्कार की दृष्टि से देखा, पर मेरी विनय को ध्यान में रखकर दूसरे दिन ठहरने की इजाजत और दे दी । वैसे आमतौर से वहाँ किसी को एक दिन से अधिक ठहरने नहीं दिया जाता था ।

दूसरे दिन ठहरने का उद्देश्य यह था कि अपने संदेह की भलीभाँति जाँच कर सकूँ। उस दिन पहले दिन की भाँति दस-बारह नये आदमी आये। कल जो आदमी थे उनमें से शेष तो चले गये थे पर तीन वहीं जमें हुए थे। वे तीन ही शेष आगन्तुको की बातें कुरेद कर पूँछ रहे थे। जो आदमी कल स्टेशन से मेरे साथ आया था वही आज भी स्टेशन से दो आदमियों को साथ लाया। अब मैं जान गया कि यह चार बँधे हुए दलाल हैं। लोगों से बातें पूछकर शाक्त को बताते रहते हैं और वह उन्हीं बातों को अपनी सिद्धाई जताते हुए दुहरा देता है।

आज जो आदमी आये थे, उनमें से एक प्राइमरी स्कूल का अध्यापक था। उसे अलग बुला कर मैंने सब बात कह दी और इस बात पर सहमत कर लिया कि उन पूछने वालों को सारी बातें गलत-सलत बतावेगा। उसने ऐसा ही किया। दूसरे दिन अन्य सब लोगों की बातें तो ठीक-ठीक बता दी गयीं, पर अध्यापक के सम्बन्ध में कही सब बातें बिल्कुल गलत थीं। मेरा नम्बर आया तो कल वाली बातें ही फिर बतायी गयीं।

त्रिकालदर्शी शाक्त के मायाचार का भण्डाफोड़ करता हुआ मैं वहाँ से उल्टे पाँवों वापस चला आया।

(४) ऐसा योगी जिसके पेशाब में दिये जलते थे।

सिन्ध प्रान्त में शिकारपुर के पास एक ऐसे योगी की चर्चा सुनी, जिसके पेशाब में दिये जलते थे। हिन्दी भाषा में "पेशाब में दिये जलना" एक कहावत है, जिसका प्रयोग तेजस्विता प्रदर्शन के लिये होता है। जैसे किसी आदमी का आतंक चारों ओर छाया हुआ हो, उसका आदेश मानने के लिये बड़े-बड़ों को विवश होना पड़ता हो तो उस आदमी के लिये कहा जायगा कि "उसके पेशाब में दिये जलते हैं।" इस कहावत को चरितार्थ करके अपनी

तेजस्विता और योग साधना की सफलता प्रकट करने के लिये वे योगीजी पेशाब में दिये जलाते थे । उनके शिष्यों का कहना था कि वे दिन भर में केवल एक बार पेशाब करते हैं और जब करते हैं तब वह घी ही निकलता है । उनके पेशाब का समय शाम को पाँच बजे था । उस समय सैकड़ों दर्शक इस आश्चर्य को अपनी आँखों से देखने के लिये एकत्रित होते थे ।

करांची में मुझे यह पता लगा था । मैं वहाँ से शिकारपुर के लिये चल दिया । वहाँ से खोजता-खोजता उन योगिराज के पास जा पहुँचा था । एक घण्टे बाद ही पेशाब करने की बेला आ गयी । अपने कमरे में से महात्माजी निकले । उनके आते ही कीर्तन आरम्भ हो गया और तुरन्त ही पेशाब करने की तैयारियाँ होने लगीं । जिधर को मुँह करके बैठे थे उधर को योगी जी ने पीठ कर ली ; दर्शकों में से जिसे आज्ञा प्राप्त हो चुकी थी वह एक चाँदी का कटोरा हाथ में लेकर महात्माजी के सामने पहुँचा और कटोरे को आगे कर दिया । योगीजी उस कटोरे में पेशाब करने लगे । जब कर चुके तो वह कटोरा दर्शकों के सामने लाया गया । देखने में वह पिघले हुए शुद्ध घी की तरह था । जाड़े के दिन थे थोड़ी देर में ठण्डी हवा लगते ही वह जमने लगा । अब योगिराज के सिंहासन के पास जो दस बड़े-बड़े पीतल के दीपक दीबटों में सजाये हुए रखे थे उनमें यह घी डाला गया और बत्तियाँ डालकर दीपक जला दिये गये । सब लोग जय-जयकार कर उठे । शंख, घड़ियाल, तुरही, नगाड़े आदि बजने लगे । कटोरे में बचा हुआ घी प्रसाद की तरह उँगली की नोंक पर लिया, देखा, सूँघा, परीक्षा करके सराहना की और आँखों मे लगाया । जितने भी दर्शक थे सबको पूरा पक्का विश्वास हो गया कि योगिराज पहुँचे हुए हैं, उनकी आत्मा दिव्य है, शरीर दिव्य है और मलमूत्र तक दिव्य है । इस दिव्यता के कारण उन्हें जनता का धन और सम्मान प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता था ।

अनेकों प्रपंचों में से पार निकलने के कारण मेरा मन बहुत संशयाक्त था कि कटोरे मे या तो कोई पर्दा होगा या पेशाब को किसी प्रकार उलट कर घी डाल दिया जाता होगा, पर जब आँखों से देखा तो जाना कि यहाँ ऐसी कोई गुन्जायश नहीं है, क्योंकि योगीजी नंगे बदन रहते थे । कमर में एक छोटा-सा कपड़े का टुकड़ा था । भरी सभा में पीठ मोड़कर उनने पेशाब किया था, चाँदी का कटोरा सैकड़ों हाथों में होकर गुजरा था । कहीं किसी बात में कोई रहस्य मालूम न पड़ता । यह सचमुच आश्चर्यजनक बात थी । मनुष्य का मूत्र विशुद्ध घृत जैसा हो यह वास्तव में बड़े अचम्भे की चीज थी ।

पूर्ण सत्यता को जानने के लिये मैंने वहाँ अड्डा डालकर रहने का निश्चय किया । दर्शकों के चले जाने के बाद मैं योगिराज से मिला । योग मार्ग में मेरी रुचि, ऊँची विद्या, आकर्षक व्यक्तित्व, मृदुल स्वभाव इन सब बातों ने उनके ऊपर काफी प्रभाव डाला । ऐसे व्यक्तियों को अपने पास रखने में, उन्हें शिष्य बना लेने में साधु लोग अपना बड़ा लाभ देखते हैं, उनकी इस कमजोरी को मैं भलीभाँति जानता था इसलिये अपना परिचय और भावी कार्यक्रम उन्हें इस प्रकार बताया गया जिससे उनकी कृपा सहज ही मुझे प्राप्त हो गयी । जिस कमरे में महात्माजी रहते थे उसके पीछे वाले कमरे में मुझे रहने के लिये जगह दे दी । मैं उसमें सुखपूर्वक रहने लगा ।

सत्यता की जाँच किस प्रकार हो, ऐसे उपाय मैं खोजने लगा । जहाँ पेशाब किया जाता था, वहाँ कोई चालबाजी नहीं होती थी । यह मैंने दो रोज में सब प्रकार जाँच लिया । एक दिन हाथ में कटोरा लेकर मैंने खुद पेशाब कराया । मूत्रेन्द्रिय से घी निकलते मैंने खुद अपनी आँखों से देखा था । यदि कोई गड़बड़ होती होगी तो वह उनके रहने के कमरे में ही की जाती होगी ऐसा विचार करके मैं ऐसा उपाय सोचने लगा जिससे उनके ऊपर निगरानी

रखी जा सके । हर वक्त द्वारपाल रहता था । बिना आज्ञा के किसी को उनके पास जाने की अनुमति नहीं थी । कमरे में कोई अन्य दरवाजा या खिड़की न थी । अब किस प्रकार सफलता मिले इस खोज में मैंने योगीजी के कमरे के चारों ओर बड़े ध्यानपूर्वक कई चक्कर लगाये कि कोई मार्ग ऐसा मिले जिसमें होकर कमरे के भीतर की बात दिखाई दे सकें, पर ऐसा कोई छिद्र दिखाई न पड़ा । अब मैं अपने कमरे की छत पर चढ़ा और दूसरे कमरे के लिये कोई छिद्र खोजने लगा । सौभाग्यवश छत से कुछ नीचे एक छोटा रोशनदान मिला । खड़े होकर उसमें से योगीजी वाले कमरे का आधा भाग देखा जा सकता था । इस छिद्र में आँखें लगाकर पेशाब करने के दो घण्टे पूर्व खड़ा हो गया और देखने लगा कि योगीजी कोई विशेष क्रिया तो नहीं करते हैं ।

जब पाँच बजने में पन्द्रह मिनट बाकी रहे तो उन्होंने बोतल में रखी हुई एक पतली चीज निकाली । उसे कटोरी में उड़ेला और मूत्रेन्द्रिय को उसमें डुबो दिया । उन्होंने चार–पाँच लम्बे–लम्बे श्वांस खींचे और कटोरी खाली हो गयी । कटोरी को एक ओर रखकर उन्होंने मूत्रेन्द्रिय को कुछ ऐंठ कर गांठ सी बनाई और ऊपर से लंगोट कसकर बाँध लिया । इस क्रिया को करने के बाद वे दर्शकों के समक्ष चले गये । मैं भी चुपचाप छत पर से उतरकर उसी भक्त मण्डली में एक ओर जा बैठा, नित्य का क्रम यथावत् चलने लगा ।

अब घृत मूतने की दिव्य शक्ति का सारा रहस्य मेरी समझ में आ गया । हठयोगी आमतौर से वज्रोली क्रिया करते हैं । मूत्र मार्ग से जल ऊपर खींचना और फिर उसे बाहर निकाल देना वज्रोली क्रिया कहलाती है । यह कुछ भी कठिन नहीं है । हठ योग के अनेकों साधकों को हमने यह साधना करते देखा था । थोड़े ही दिनों के प्रयत्न से अभ्यास हो जाता है । इसी क्रिया का अभ्यास इन योगीजी ने कर रखा था । वे पानी की जगह मूत्रेन्द्रिय से घी

चढ़ा लेते थे, इन्द्रिय को ऐंठकर गाँठ-सी बना लेने और ऊपर से लँगोट कसने का प्रयोजन यह था कि चढ़ाया हुआ घी फैलने न पाये। पेशाब से निवृत्त होकर घी चढ़ाया जाता है जिससे कहीं घी और पेशाब मिल न जायें।

रहस्य मालूम हो चुका था तो भी उसकी एक बार पुष्टि करने की और आवश्यकता थी। दूसरे दिन जब वे योगी जी पुनः जनता के सामने आये तो मैं अवसर पाकर उनके कमरे में चुपके से घुस गया और उस घी भरी बोतल को चुपचाप आलमारी में से निकाल लाया। आलमारी ज्यों की त्यों बन्द कर दी। दूसरे दिन नियत समय पर जबकि महात्माजी के आने की तैयारी हो रहीं थी, अचानक संदेश आया कि योगीजी समाधि मग्न हो गये हैं वे आज दर्शन देने न आवेंगे। मैं समझ गया कि यह समाधि और कुछ नहीं घी की बोतल ठीक समय न मिलने और उसकी दूसरी व्यवस्था तुरन्त न हो सकने की समाधि है।

जानकारी पूरी हो गयी। दूसरे दिन खिन्न चित्त, उदास चेहरा लेकर वहाँ से चल दिया।

(५) मूक प्रश्न बताने वाले ज्योतिषी

मुख से बिना कुछ कहे पूछे जाने वाले प्रश्नों को मूक प्रश्न कहते हैं। अनेकों ज्योतिषी मूक प्रश्न बताते हैं, हमें ऐसे ज्योतिषियों से कई बार काम पड़ा है। उनके भेदों को जानने में भी असाधारण परिश्रम तथा काफी समय लगाना पड़ा है।

एक बार आगरा में एक ज्योतिषीजी आये। बेलनगंज की धर्मशाला में ठहरे। शहर भर में मुनादी तथा इश्तहारों द्वारा सूचना कराई गई कि ज्योतिषीजी मूक प्रश्नों का उत्तर देते हैं, हम भी पहुँचे। उनका तरीका यह था कि जो आदमी उनके पास जाय वह एक कागज पर अपना प्रश्न लिखकर अपने पास चुपचाप रख ले, ज्योतिषीजी उस प्रश्न को भी बताते थे और उसका उत्तर भी देते

थे । फीस हर प्रश्न की २) रु. थी । सबेरे से शाम तक पचास-साठ प्रश्न पूछने वाले उनके पास पहुँचते थे । आसानी से १००) रु. रोज की आमदनी हो जाती थी । प्रश्नों को प्रायः ठीक ही बता दिया जाता था ।

बारीकी से देखने पर मालूम हुआ कि इस विद्या का रहस्य उस कापी में था जो वहाँ आमतौर से खुली हुई पड़ी रहती थी । पाठक उसी के कागजों पर अपने प्रश्न लिखते थे और कागज फाड़कर अपनी जेब में रख लेते थे । इस कापी में जो कोरे कागज थे वे चतुरतापूर्वक रासायनिक ढंग से बनाये गये थे । कागजों की पीठ पर बढ़िया साबुन घिस दिया जाता था । पेन्सिल से लिखने पर कार्बन पेपर के रंग की भाँति कागजों की पीठ पर घिसा हुआ साबुन नीचे वाले कागज पर लग जाता था कार्बन के लिखे हुए अक्षर नीले रंग के कारण साफ दिखाई पड़ते हैं पर साबुन के अक्षर सफेद और हल्के होने के कारण दीखते नहीं पर उन्हें विशेष उपाय से पढ़ा जा सकता है । उस नकल आये हुए कागज पर राख, गुलाल, रामरज या गेरू का चूर्ण या कोई अन्य ऐसी ही बारीक पिसी हुई चीज डाली जाय तो साबुन के स्थान पर वह चीज चिपक जाती है और अक्षर स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकते हैं या उस कागज को पानी में डुबो दिया जाय तो वे साबुन के अक्षर दिखाई दे सकते हैं । यही उन ज्योतिषीजी की विद्या थी । इसी के बल पर वे कमाते-खाते थे । थोड़े से परिश्रम से ही मैंने उनके इस रहस्य को जान लिया ।

एक ऐसे ही ज्योतिषी से जबलपुर में भेंट हुई । उनका रहस्य यह था कि सादा कागज के टुकड़े काट कर रख देते थे, पेन्सिलें पड़ी रहती थीं । कागज पर पेन्सिल से लिखते समय कोई चीज नीचे रखने की आवश्यकता पड़ती है । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये वहाँ कितनी ही मोटी-मोटी किताबें पड़ी थीं । जिल्दों के पट्ठे के ऊपर एक हलका कागज चढ़ाया हुआ था । उस कागज और पट्ठे

के बीच में कार्बन पेपर तथा सफेद कागज लगा रहता था । उस पट्ठेदार किताब के ऊपर कागज रखकर जो कुछ लिखा जाता था उसकी नकल बीच के सफेद कागज पर उस कार्बन पेपर के द्वारा हो जाती थी । ज्योतिषीजी का सेवक उन पुस्तकों को वहाँ से ले जाता था और नकल वाला कागज निकाल कर उन पुस्तकों को वहीं रख जाता था । इस नकल को देखकर ज्योतिषी जी मूक प्रश्न बताते थे ।

एक ज्योतिषी ने अपना अलग ही नया तरीका निकाला था । उससे बम्बई मे भेंट हुई । प्रश्नकर्त्ता उसके सामने जाकर कुर्सी पर बैठता था, यह अपनी मेज की दराज में से एक स्लेट और पेन्सिल निकालता था, प्रश्नकर्त्ता की ओर देख-देखकर वह जल्दी-जल्दी सिलेट पर कुछ लिखता था और पूरी सिलेट लिख जाने पर उसे दराज में फिर रख देता था । अब प्रश्नकर्त्ता से बातचीत होती-आप कहाँ से पधारे हैं ? क्या काम है ? आदि सारी बातें पूछते, जब वार्तालाप पूरा हो जाता तो मेज के दराज में से सिलेट निकाल कर प्रश्नकर्त्ता के हाथ में देते और पढ़ने को कहते । इस स्लेट में वही सब बातें लिखी होतीं जो प्रश्नकर्त्ता ने बतायीं थीं । ज्योतिषी कहता आपके आते ही बिना आपसे एक शब्द पूछे सारी बातें जान ली थीं और इस सिलेट पर लिख कर रख दी थीं । प्रश्नकर्त्ता बेचारा आश्चर्य में पड़ जाता और ज्योतिषीजी की विद्या से प्रभावित होकर उन्हें शक्ति भर भेंट दक्षिणा देता ।

पता चलाने पर ज्ञात हुआ कि ज्योतिषीजी की बड़ी मेज के दोनों ओर जमीन तक जाने वाले बड़े-बड़े दराज थे, उसमें नीचे एक आदमी बैठा रहता था । ज्यातिषी आरंभ में जो कुछ लिखते वह व्यर्थ कलम घिसावट थी । वैसी ही दूसरी सिलेट लिये एक आदमी दराज में बैठा रहता था और जो वार्तालाप दोनों में होता था उसे सुनकर तथ्य की बातें लिखता जाता था । वही सिलेट अन्त में

प्रश्नकर्त्ता को दिखाई जाती । बेचारा समझता कि मेरी वार्ता से पूर्व ही यह सिलेट लिखी गयी थी ।

इस प्रकार के एक नहीं अनेकों ज्योतिषी, तेजी-मन्दी बताने वाले, भविष्यवक्ता देखे, उनमें से मुझे किसी के पास भी कोई चीज नजर नहीं आयी । यों तो अटकल से दस बातें कही जाँय तो उनमें से पाँच-छः तो ठीक निकलती ही हैं । इन ठीक निकली बातों को लेकर ज्योतिषी लोग अपनी विद्या का ढिंढोरा पीटते हैं और जो बातें गलत निकलतीं उनको दबा देते हैं ।

(६) भूतों के एजेण्ट

भूतों के एजेण्ट गाँव-गाँव मिल जाते हैं । जिन्हें सियाने, ओझा, भोपा आदि कहते हैं । यह लोग भूतों का अस्तित्व सिद्ध करने, उन्हें बुलाने, भगाने तथा उनके द्वारा कई प्रकार के काम कराने के करिश्मे दिखाते हैं । छोटे बालकों के दस्त, बुखार, अधिक रोना, हाथ-पाँव मरोड़ना, आँखें न खोलना, उलटी सरीखे रोग भूत-चुड़ैलों के आक्रमण समझे जाते हैं । अशिक्षित तथा अन्धविश्वासी लोगों में ओझाओं द्वारा झाड़-फूँक करना ही इसका उपाय समझा जाता है । स्त्रियों का विशेष रूप से भूतों पर विश्वास होता है उनके बहुत से रोग भूत बाधा माने जाते हैं, मृगी, बन्ध्यापन, गर्भपात, बच्चों का मर जाना, दूध न उतरना, दुःस्वप्न, मूर्छा आदि रोगों को भूत-चुड़ैल का कारण समझा जाता है । आवेशयुक्त अन्य रोग भी इसी श्रेणी में गिने जाते हैं । उन्माद, आवेश भयातुरता, तीव्र ज्वर, प्रलाप, तीव्र शूल, आदि रोग चाहे वे पुरुष को हों या स्त्री को भूतों के उपद्रव समझे जाते हैं । कंठमाला, विषवेल सरीखे फोड़े, सर्प का काटना यह भी प्रेतात्माओं से सम्बन्धित समझा जाता है । सूने घर में चूहों द्वारा मचाई गयी खड़बड़, बिल्ली-बन्दर आदि का कूदना कभी-कभी भूत बन जाते हैं । किसी मृत जानवर या मनुष्य की हड्डियों का फॉस्फोरस कभी-कभी वायु के संस्पर्श से अचानक जल उठता है,

केंचुए की मिट्टी का फास्फोरस जमीन पर प्रकाशवान हो उठता है । चिड़ियाँ अपने खाने के लिये केंचुओं को घोंसले में रख लेती हैं । वहाँ भी फास्फोरस चमकने लगता है । इस प्रकार के प्रकाशों को भूतों की करतूतों का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया जाता है ।

ऐसा ही कोई कारण उपस्थित होने पर इन सयाने लोगों का आह्वान किया जाता है । वे अपनी अलौकिकता को सिद्ध करने के लिये नीबू को चाकू से काटकर रस की जगह खून निकालना, लोटे में चावल भरना और उस भरे हुए लोटे को चाकू की नोंक से चिपका कर अधर उठा लेना, कच्चे सूत के धागे पर तेल का भरा हुआ जलता दीपक रखना, ऊपर से उलटे मुँह की मटकी रख देना और फिर थाली का पानी खींचकर चढ़ जाना, लोटे में पानी भरकर एक कपड़े से मुँह बाँधकर लोटे को उल्टा लटका देना, घड़े में से छन कर जरा भी पानी न फैलना आदि अनेकों प्रकार के चमत्कार दिखाकर अपने अन्दर अलौकिकता सिद्ध करते हैं, परन्तु वस्तुतः उनमें कोई चमत्कार नहीं होता । यह सब बातें साइन्स, रसायन या चतुरता पर निर्भर होती हैं । देखने वाले उससे प्रभावित होते हैं और सयाने की योग्यता पर विश्वास करके उसको भेंट देने और उसकी इच्छानुसार कार्य करने के लिये प्रस्तुत हो जाते हैं ।

स्त्रियों को भूतावेश बहुत आते हैं । इसका कारण मनोवैज्ञानिक है । उन्हें बुरी तरह परतंत्र रहना पड़ता है । घर के छोटे पिंजड़े में पर्दे के कठिन बन्धनों से जकड़ी हुई वे रहती हैं । मुद्दतों एक स्थान पर रहते-रहते उनका मन ऊब जाता है । पिता के घर की याद आती है । मैके जाने को जी भटकता है, पर उनकी अपनी इच्छा का कोई मूल्य नहीं, ससुराल का अरुचिकर वातावरण, वहाँ वालों का दुर्व्यवहार आदि अनेक कारणों से स्त्रियों को क्षोभ उत्पन्न होता है, वे भीतर ही भीतर घुटती हैं । मनोविज्ञान शास्त्र की दृष्टि से इस 'घुटन' का उनके ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है । दबी

हुई अतृप्त इच्छायें किसी विस्फोट के लिये अवसर खोजती हैं । अनेकों स्त्रियों को हिस्टीरिया के दौरे आने लगते हैं । जिन परिवारों में भूतवाद पर विश्वास किया जाता है उनकी आत्म त्रास से पीड़ित स्त्रियाँ भूतों के बारे में सोचने लगती हैं और उन्हें भूत सिर आने लगते हैं । उनका विश्वास और आत्मत्रास मिलकर एक वास्तविक मानसिक रोग बन जाता है । यह रोग कभी-कभी प्राणघातक भी सिद्ध होता है । नवयुवती स्त्रियाँ जब तक माता नहीं बनतीं तब तक उनको भूतावेश का भय अधिक रहता है । जब उनके बालक हो जाते हैं तो मस्तिष्क की दिशा दूसरी ओर मुड़ जाती है, ऐसी दशा में भूतोन्माद का भय बहुत ही कम रह जाता है ।

रोग धीरे-धीरे समय पाकर अपने आप अच्छे होने लगते हैं । स्त्रियाँ सहानुभूति पाकर अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होने पर एवं सयाने के उपचार से प्रभावित हो जाती हैं । आवेश, उन्माद आदि भी समय पाकर ठीक हो जाते हैं । इसका श्रेय सयाने को मिलता है, उसकी रोजी चलती रहती है । भूतों की अनेकों कथायें कही जाती हैं, पर उन कथाओं की कड़ी जाँच करने पर मालूम होता है कि उनमें तीन-चौथाई से अधिक तो बिलकुल कल्पित, मनगढ़न्त किंबदन्तियाँ होती हैं । आश्चर्य एवं कौतूहल उत्पन्न करने के लिये कितने ही लोग कह देते हैं कि ऐसा हमने देखा था, पर असल में उसने देखा नहीं सुना होता है और उस सुनने के आधार पर पता लगाने पर मालूम होता है कि किसी ने यों ही गप्प उड़ा दी है । एक-चौथाई से कम घटनायें कुछ सार गर्भित होती हैं, उनके कारण किसी अन्य वैज्ञानिक तथ्य पर अवलम्बित होते हैं ।

भूत उतारने वाले बड़े-बड़े प्रसिद्ध सयानों के यहाँ हम पहुँचे हैं । उनके यहाँ प्रतिदिन दस-बीस ऐसे रोगी पहुँचते और अच्छे होते थे । भूतों का आवेश बुलाना, रोगी पर चढ़े भूत से बातें पूछना, भूत उतारने की क्रिया करना, यही सब व्यापार दिन भर उनके यहाँ होता

है । एक ने तो बहुत बड़े लट्ठे और कितनी ही जंजीरें बाँध रखी थीं । उसका दावा था कि इस लट्ठे पर जंजीरों से उसने कितने ही बड़े–बड़े भूतों को बाँध रखा है । इन भूत उतारने वालों में से प्रायः सभी से हमने विनय पूर्वक, सेवा से प्रसन्न करके, लोभ देकर, चुनौती से उत्तेजित करके यह प्रार्थनायें कीं कि वे हमें भूत को दिखा दें या हमारे ऊपर भूतावेश बुला दें, पर उनमें से किसी ने भी यह छोटी–सी प्रार्थना स्वीकार न की । यदि सचमुच इतने भूतों को ये लोग इधर से उधर करते हैं तो एक भूत हमारे ऊपर छोड़ देने से इनको क्या लगता था ?

इतना तो माना जा सकता है कि जिन लोगों को किसी कारणवश भूतोन्माद है उनका मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में उस रीति से भी उपचार किया जा सकता है जिस रीति से कि सयाने लोग करते हैं । परन्तु सयानों में वस्तुतः भूत बुलाने–भगाने की योग्यता होती है, यह नहीं कहा जा सकता । सयाने अपने ऊपर जो भूतावेश बुलाते हैं उसके वास्तविक होने में भी पूरा–पूरा संदेह है । भूतों की सहायता से किसी को बीमार कर देने, मार डालने या लड़का पैदा कराने की बात असत्य है । सयाने लोग अपनी प्रतिष्ठा एवं लाभ के लिये इस प्रकार का आडम्बर रचा करते हैं । अनेकों सयाने लोगों से मिलकर बातें करने और जाँच करने पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं ।

एक नई किस्म के सुशिक्षित सयाने कुछ दिनों से और पैदा हुए हैं । इनका तरीका विलायती है । यह 'स्प्रिचुएलिज्म' कहलाता है । अंग्रेजी में इस विषय पर कितनी ही पुस्तकें हैं । देशी भाषाओं में भी थोड़ी–बहुत पुस्तकें इस विषय पर मिल जाती हैं । यह लोग प्रेतों को बुलाते हैं और उनसे वार्तालाप करते हैं । इस तरीके के अनुसार प्रेत प्रायः लिखकर उत्तर देते हैं । कई आदमी गोल चक्र बाँधकर बैठते हैं । बीच में एक मेज रख लेते हैं । अब कई

तरीकों से प्रेतों से वार्तालाप किये जाते हैं । जैसे-(१) ओटोमैटिक राइटिंग द्वारा—इस विधि में मन ही मन ऐसी भावना की जाती है कि हमारे ऊपर भूतावेश आवे । थोड़ी देर में किसी के ऊपर आवेश आता है । उसको कागज और पेन्सिल दे दी जाती है । जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनका वह आवेश मग्न व्यक्ति उत्तर लिखता है, इन उत्तरों को प्रेत का उत्तर समझा जाता है । (२) प्लेनचिट द्वारा—यह लकड़ी का एक टुकड़ा होता है । जिसमें पहिये लगे होते हैं । एक छेद में पेन्सिल लगा दी जाती है । इस प्लेनचिट के नीचे कागज रखते हैं । थोड़ी देर में पहिया चलता है और पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्लेनचिट में लगी हुई पेन्सिल लिखने लगती है । (३) तिपाई द्वारा—तीन पैर की मेज पर कई व्यक्ति हाथ रखकर बैठते हैं । थोड़ी देर में प्रेत के आने पर मेज के पाये उठने गिरने लगते हैं और खट-खट की संकेत माला बना ली जाती है और तार घर डेमी की गरगट्ट-ध्वनि से जिस प्रकार शब्द बनते हैं, वैसे ही मेज के पाये की खटखट के संकेतों से मतलब निकालते हैं । इस प्रकार के और भी कई तरीके हैं ।

इन तरीको के बारे में कई सन्देह उत्पन्न होते हैं । ओटोमेटिक राइटिंग-स्वलेखन के बारे में यह संदेह उत्पन्न होता है कि जो विचार पेन्सिल से लिखे जाते हैं, वे उसने स्वसंमोहन के आवेश में लिखे हों या यों ही ठठोली में । प्लेनचिट के चलाने में या मेज के पाये खटकाने में चक्र में बैठा हुआ कोई व्यक्ति यह हरकतें करता है । इस और ध्यान न दिया जाय तो भी जो उत्तर प्राप्त होते हैं वे सन्तोषजनक नहीं होते । ऐसी बात जिनकी जाँच नहीं हो सकती उनका वर्णन प्रेतों द्वारा मिलता है । जैसे परलोक कैसा है ? वहाँ प्रेत लोग किस प्रकार रहते हैं ? क्या खाते हैं ? क्या करते हैं आदि । इन प्रश्नों के जो उत्तर दिये जाते हैं उनकी सत्यता-असत्यता के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता । इसकी

सचाई की जाँच का तरीका यह है कि ऐसे प्रश्न पूछे जाँय जिनका ठीक उत्तर केवल उस स्वर्गीय आत्मा को ही मालूम हो । जिन बातों की जानकारी उस आवेश वाले व्यक्ति को किसी प्रकार होने का अन्देशा हो वह प्रश्न न पूछे जाँय । कभी-कभी कोई भुलावे में डालने वाले प्रश्न भी पूछे जाँय । ऐसे दो-चार प्रश्न पूछते ही इन लोगों की कलई खुल जाती है और सारा खयाली महल ढह पड़ता है ।

बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रेत विद्या के ज्ञाता एक बार आगरा पधारे । उनका सार्वजनिक भाषण हुआ । एक प्रोफेसर साहब के यहाँ वे ठहरे हुए थे । हम कई मित्र उनसे मिलने गये । चक्र किया गया । हमारे साथ जो मित्र वहाँ मौजूद थे, उन्हीं की प्रेतात्मा बुलाई गयी । वह आ गयी और उत्तर देने लगी । हमारे पिताजी बुलाये गये और उनसे पूछा गया कि आप जब रामेश्वर यात्रा पर गये थे तब के कुछ संस्मरण सुनाइये । उन्होंने बहुत सारे संस्मरण सुनाये, पर वास्तव में हमारे पिताजी कभी रामेश्वर गये ही न थे । तीसरे मित्र ने अपनी माताजी बुलायीं और छोटी बहन के लिये कुछ संदेशा माँगा । माताजी ने बहुत-सी बातें अपनी बेटी के सम्बन्ध में कहीं, पर वास्तव में उनकी कोई बहिन न थी । तीनों ही प्रश्न गलत थे । तीनों में से एक के लिये भी प्रेतों ने यह नहीं कहा कि यह प्रश्न गलत हैं । बल्कि सविस्तार उत्तर दिये । इससे हम लोगों की आस्था उनके परलोक वाद पर से उठ गयी । इसी तरीके को काम में लेकर हमने कितने ही चक्र करने वालों को छकाया । यह बुद्धि का युग है । जब तक किसी बात को ठीक प्रकार प्रमाणित न कर दिया जाय, तब तक उस बात को विज्ञ समाज स्वीकार नहीं कर सकता ।

(७) भविष्य वक्ताओं की चतुरता

भविष्य वक्ताओं की अनेकों श्रेणियाँ हैं । वे अनेक रीतियों से काम करते हैं । ज्योतिषी लोग पंचांग, जन्मपत्र आदि में ग्रह-नक्षत्र देखकर, सगुनियाँ-स्वर तथा अन्य शकुनों को देखकर फल बताते हैं । चक्रों पर हाथ रखवाकर, रमल के पासे डलवाकर, हाथ देखकर, सामुद्रिक विधि से भविष्य बताया जाता है । आवेश में आये हुए देवी-देवता भी बताते हैं । अमुक तिथि को इस प्रकार हवा चले, धूप निकले, पानी वर्षे तो उसका वर्षा तथा फसल में भले-बुरे होने का भविष्य किसान लोग अनुमान करते हैं । साँप के बोलने, गिरगिट के रंग बदलने, कुत्तों के रोने आदि से आगे घटित होने वाली घटनाओं का कुछ लोग अन्दाज लगाया करते हैं ।

भविष्य पूछने वालो में आमतौर से वे लोग होते हैं जिन्हें वर्तमान में कोई विशेष चिन्ता होती है और भाविष्य में उस चिन्ता से छुटकारा पाकर किसी आशामय परिस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं । आमतौर से खोई हुई वस्तुओं का पता पूछने वाले, खोये हुए बच्चे या घर से भागे हुए मनुष्य की खोज करने वाले, विवाह के इच्छुक, सन्तान के अभिलाषी, परीक्षाफल जानने की तलाश करने वाले, नौकरी-बदली-तरक्की पूछने वाले, व्यापार में तेजी-मन्दी का सट्टा-दड़ा आदि पूछने वाले होते हैं । जैसे वैद्य लोग बहुत दिन के अनुभव के बाद शकल, सूरत और रंग-ढंग देखकर बता देते हैं यह किस रोग का मरीज है और प्रायः उनका अंदाज ठीक निकलता है । उसी प्रकार भविष्यवक्ता लोग भी प्रश्नकर्त्ताओं के रंग-ढंग मुख मुद्रा आदि को देखकर यह सहज ही अन्दाज लगा लेते हैं कि वह क्या पूछना चाहता है । इस परख के आधार पर वे सहज ही किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं और प्रायः बिना पूछे ही बता देते हैं कि प्रश्नकर्त्ता क्या पूछने आया है ? बहुत से भविष्यवक्ता उस

सीमा तक पहुँचे हुए नहीं होते । वे प्रश्नकर्त्ता के अपना उद्देश्य प्रकट करने पर ग्रह, गणित या अन्य क्रिया–कलाप करके उत्तर देते हैं ।

उत्तर देते समय भविष्यवक्ता लोग ज्योतिष पर ही निर्भर नहीं रहते वरन् यह देखते हैं कि स्थिति क्या है ? कैसी आशा है ? जो परिस्थिति सामने है उसे देखते हुए किस प्रकार की संभावना है ? इन अनुमानों की सूक्ष्म विवेचना करके जो उत्तर देते हैं उनके उत्तर प्रायः बहुत अंशों में ठीक उतरते हैं । इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है । हर एक विद्वान मनुष्य अपनी विवेचना शक्ति के द्वारा बारीकी से सोचता है और अपनी दैनिक बातों के सम्बन्ध में आगे की बातों का अन्दाजा लगाता है । वह अंदाज बहुत अंशों में ठीक भी होता है । यदि ठीक न हो तो उसका कारोबार ठप हो जाय । जिस बुद्धि–सूक्ष्मता के आधार पर चतुर पुरुष अपने व्यावहारिक कार्यों में सफल होते हैं उसी बुद्धि सूक्ष्मता से ज्योतिषी लोग दूसरों के सम्बन्ध में अन्दाज लगाते हैं । वे अनुमान बहुत अंशों में ठीक उतरते हैं । ठीक उतरने पर वे सिद्ध समझे जाते हैं, प्रशंसा के पात्र बनते हैं और धन लाभ करते हैं ।

कभी–कभी बताये हुए उत्तर गलत भी हो जाते हैं क्योंकि अटकलें सदा ही ठीक नहीं उतरतीं । गलत निकली हुई बातों को यह कहकर टाल दिया जाता है कि "परमात्मा की इच्छा प्रबल है, भाग्य के लिखे को कोई मेंट नहीं सकता, बुरे दिन होने पर सोना पकड़ो मिट्टी हो जाता है, हमारी विद्या तो सत्य है पर उस विद्या के अनुसार निष्कर्ष निकालने वाले से भूल हो जाने पर उत्तर गलत हो जाते हैं, हम मनुष्य हैं इसलिये हमसे भी भूलें होना स्वाभाविक है" इसके अतिरिक्त "जन्म समय ठीक तरह न मालूम होने, प्रश्न करने के लिये प्रातःकाल आदि शुभ समय में न आने, प्रश्न पूछने के लिये आने के साथ–साथ फल, फूल, मिष्ठान्न, दक्षिणा आदि

मांगलिक चीजें पर्याप्त मात्रा में न लाने इत्यादि बहाने आसानी से बनाये जा सकते हैं ।

सोना, चाँदी, रुई, तिलहन आदि की तेजी मन्दी के सट्टे करने वाले का आधार कल्पना शक्ति ही तो होती है । सटोरिये अन्दाज ही तो लगाया करते हैं कि आगे मन्दी आयेगी या तेजी । जब उनका निशाना ठीक बैठ जाता है तो मालोमाल हो जाते हैं नहीं तो दिवालिया बनते देर भी नहीं लगती । जैसे को तैसे साथी मिलते रहते हैं । अक्ल की फातियाँ उड़ाने वाले ज्योतिषी लोग उन्हें मिल जाते हैं "लगा तो तीर नहीं तो तुक्का बना बनाया है ।"

इन तेजी मन्दी बताने वालों को चुनौती देते हुए एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति ने हमारे पास शर्तनामा भेजा है कि यदि कोई भविष्यवक्ता प्रतिदिन केवल एक वस्तु की तेजी-मन्दी बतला दिया करे तो उसे केवल एक प्रश्न बताने के लिये एक हजार रुपया प्रतिदिन दिया जायेगा । इसके लिये वे एक वर्ष का वेतन एक हजार रुपया प्रतिदिन के हिसाब से जमा कर देने और शर्तनामा अदालत में रजिस्ट्री करने को तैयार हैं । शर्तनामा हमने हिन्दुस्तान के प्रायः सभी ज्योतिषियों के पास भेजा है, पर किसी ने भी उस चुनौती को अब तक स्वीकार नहीं किया है और भविष्य में कोई उस चुनौती को स्वीकार करेगा ऐसी आशा भी नहीं है ।

हम लोग देखते हैं कि यह लोग कुछ फीस या दक्षिणा लेकर तेजी-मन्दी आदि बताते हैं । इससे स्पष्ट है कि पैसे की इच्छा तो उनको है । जब पैसे की आवश्यकता और इच्छा उनको है ही और तेजी-मन्दी आदि जानते ही हैं तो वे स्वयं ही सटोरिये बन कर मालोमाल क्यों नहीं बन जाते ? दूसरी बात यह है कि जब भविष्य को वे जानते भी हैं तो फिर अपने बारे में भी जानते होंगे कि हमें कब कितनी आमदनी होगी, यदि यह मालूम ही है कि इतना पैसा हमको अमुक समय मिल जायगा तो फिर ज्योतिष विद्या या और

कोई ढोंग करने की क्या आवश्यकता है ? बैठे-बैठे मौज करें, जो भाग्य का होगा अपने आप आ जायेगा । यह दोनों बातें बहुत ही सीधी और सरल हैं, पर कोई भी भविष्य वक्ता इस मार्ग पर चलता दिखाई नहीं देता । इससे प्रतीत होता है कि किसी ज्योतिषी को स्वयं अपने ऊपर विश्वास नहीं है । ऐसी दशा में दूसरे विचार वाले लोग उन पर किस प्रकार विश्वास करें ? यह एक प्रमुख समस्या है ।

(८) दिव्यदर्शी तान्त्रिक

अप्रत्यक्ष गुप्त बातों को जानने का दावा करने वाले अनेकों व्यक्ति हमारे संपर्क में आये । मैस्मरेजम के नाम से कितने ही लोग इस प्रकार के खेल करते हैं । एक बार हमने देखा कि एक मैस्मरेजम करने वाले ने एक लड़के को मन्त्र बल से बेहोश किया । लड़के की आँखों पर पट्टी बाँधी और ऊपर से कपड़ा डाल दिया । इससे किसी को यह संदेह न रहे कि लड़का आँखों से देख सकता है । अब जादूगर ने वहाँ उपस्थित लोगों के सम्बन्ध में उस लड़के से पूछना शुरू किया । चारों ओर जमा हुई दर्शकों की भीड़ में जादूगर चक्कर लगा रहा था । वह लोगों का छाता, घड़ी, अंगूठी, शरीर का कोई अंग, कपड़ा आदि पकड़ता और उस लेटे हुए लड़के से पूछता कि यह क्या है ? लड़का तुरन्त उत्तर देता-यह अमुक चीज है । पुस्तकों के पृष्ठ, भाषा, घड़ियों का समय, रुपयों के सन् आदि अनेक बात पूछी गयीं और उनके ठीक-ठीक उत्तर मिले । देखने वाले सभी लोग आश्चर्य में थे ।

इस विद्या को जानने की हमें बड़ी उत्सुकता हुई । जिस जादूगर ने यह खेल दिखाया था उसके पीछे बहुत दिनों लगे रहे । पहले तो वह हमें त्राटक आदि अभ्यासों में उलझाकर हमें टालता रहा, पर पीछे उसकी मुँहमाँगी दक्षिणा देने पर सब भेद बताया । रहस्य यह था कि एक लड़के को एक पाठमाला रटा ली जाती है

प्रश्न और उत्तर पहले से ही निर्धारित होते हैं जैसे यह क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर होगा–छाता । यह क्या चीज है ? इस प्रश्न का उत्तर होगा–घड़ी । पूछने के शब्दों मे थोड़ा हेरफेर करने से दर्शक तो कुछ समझ नहीं पाते, पर वह लेटा हुआ लड़का भली प्रकार ध्यान रखता है और प्रश्न की भाषा के अनुसार उत्तर देता है । ऐसी एक लम्बी प्रश्नोत्तरी हम अपनी "जादूगरी या छल" पुस्तक में दे चुके हैं । इसके अतिरिक्त कोई भी चतुर व्यक्ति अपने ढंग की नयी प्रश्नोत्तरी गढ़ सकता है । इस विधि से केवल वे ही बातें बतलायी जा सकती हैं जो पूछने वाले को मालूम थीं । जिन बातों का उत्तर उसे मालूम न होगा उसका उत्तर झूँठ–मूँठ बेहोश पड़ा हुआ लड़का भी न दे सकेगा ।

नाखून पर स्याही लगाकर उसमें बालकों को देवी–देवता दिखाने वाले तथा उनसे बात कराकर प्रश्नों का उत्तर देने वाले हमने देखे हैं । इसी कार्य को कुछ लोग एक विशेष प्रकार की अंगूठी से, त्रिकालदर्शी नामक एक काली बिन्दी लगे हुए शीशे से भी करते हैं । जिस बालक के ऊपर यह प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोग करने वाला अपनी सिद्धाई की धोंस के हथकण्डे बताकर डरा देता है और बेचारा बालक जैसा कहो वैसा हाँ–हाँ करने लगता है । यदि इस प्रकार दिखाया जाना संभव हो तो बड़ी उम्र के चतुर और निडर बालकों पर भी यह प्रयोग होना चाहिये, पर ऐसे बालकों से वे लोग सदा ही बचते रहते हैं ।

चोर पकड़ने के लिये चावल पढ़कर देना आदि तरीके एक प्रकार की धमकी है जिससे डरकर लोग चोरी कबूल कर लेते हैं । एक चोर पकड़ने वाला तांत्रिक ऐसा करता था कि जिन लोगों पर चोरी का शुबा होता था उन सबको बुलाता था और एक कोठे में लाल रंग से पुता हुआ देवता रख देता था खुद उस कोठे के बाहर बैठ जाता था । अब जिन पर शुबा होता उनको एक–एक करके

भीतर भेजता और उस देवता का स्पर्श करने को कहता । जो देवता को छूकर वापस लौटता उसका हाथ सूँघकर वह तांत्रिक बताता कि यह चोर है या नहीं । इस तरकीब से वह असली चोर को पकड़ अलग लेजा कर चोरी इस शर्त पर कबूल करा लेता कि ली हुई चीज वापस करदे तो उसका नाम प्रकट नहीं किया जायगा । चोर उस चीज को तांत्रिक को वापस कर देता और वह उसे वापस कर देता जिसकी कि वह चीज थी । इस रीति से उसे बहुत धन और यश मिलता ।

इसका रहस्य यह था कि देवता पर कच्चा लाल रंग पुता हुआ था, जो उसे छूता था उसके हाथ में लाल रंग का कुछ न कुछ दाग लगा होता था । हाथ सूँघने के बहाने वह देख लेता था कि कहीं दाग है या नहीं । दाग होने पर निर्दोष समझा जाता था । जिस आदमी ने वास्तव में चोरी की होती थी वह देवता को इस ख्याल से छूता न था कि यहाँ कोई देखने वाला तो है नहीं इसलिये न छूऊँ तो ठीक है । वह बिना छुए लौट आता था । उसके हाथ पर रंग का दाग न होता था, तांत्रिक अकेले में उससे कहता था कि चोर तुम्हीं हो, चुपचाप या तो चीजें लौटा दो नहीं तो नाम प्रकट कर दिया जायगा । चोर सिटपिटा जाता और बदनामी से बचने के लिये चीजें देकर अपना पीछा छुड़ाता । परन्तु यह तरकीब भी सदा नहीं चल सकती । केवल उन्हीं पर चलती है जो चोर देवता और मन्त्र शक्ति पर विश्वास करते हैं ।

जासूसों के जरिये या किसी अन्य प्रकार से किसी आदमी के सम्बन्ध में बहुत-सी जानकारी एकत्रित करना फिर उससे अचानक मुलाकात करके उन सब बातों को विद्या बल से बताना, इस रीति से कितने ही आदमी लोगों को आश्चर्य में डाल देते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं ।

अनेकों प्रकार के आश्चर्य

ऊपर की पंक्तियों में कुछ चमत्कारों का वर्णन किया है । इस तरह से सैकड़ों चमत्कार हमने देखे और उनके भेद मालूम किये हैं । जिनमें से अनेकों का तो अब स्मरण भी नहीं रहा है । जो याद हैं उनमें से दो-चार और लिखते हैं ।

(१) एक बार एक गाँव में एक जमींदार के यहाँ एक महात्माजी पधारे । जमींदार साहब ने बड़ी आव-भगत की । महात्माजी के बारे में यह समाचार फैलाया गया कि वे बड़े पहुँचे हुए सन्त हैं, जो कहो सो मंगा सकते हैं । रात को जब गाँव वाले बहुत से लोग बैठे हुए थे तो एक ग्रामीण ने कहा कि महाराजजी गरम खीर मँगाइये । महात्माजी ने आँख बन्द करके मन्त्र पढ़ा और फिर सावधान होकर कहा-जाओ चौपाल में खीर आ गयी । लोगों ने जाकर देखा तो सचमुच हांडी भरी खीर रखी है । वह सबको प्रसाद रूप में दे दी गयी । लोग आश्चर्य कर ही रहे थे कि एक काछी चिल्लाता हुआ आया कि चूल्हे पर रंधती हुई खीर की हांडी उड़ गयी । उसे हांडी दिखाई गयी तो उसने कहा यह मेरी ही हांडी है और मेरी आँखों के सामने आकाश को उड़ गयी थी । इस घटना के बाद योगीराज की भारी पूजा हुई । दस-पन्द्रह दिन में करीब दो हजार रुपया भेंट का आ गया ।

बहुत दिन बाद हमें पता चला कि जमींदार, खीर माँगने वाला, काछी इन तीनों को उस साधु ने षडयंत्र में शामिल किया है । उनकी परती रखी गयी थी, भेंट में से इन तीनों ने हिस्सा बाँटा था । वास्तव में खीर जमींदार के घर में बनी थी और लोगों को एकत्रित होने से पूर्व ही चौपाल में छिपाकर रख दी गयी थी ।

(२) एक साधु जी महाराज कहीं बाहर से आये और एक गाँव में मरघट के पास रहने लगे । उनकी निर्भयता से गाँव वाले बहुत प्रभावित हुए और भोजन सामग्री उनके लिये भेजने लगे । एक

दिन जब कि गाँव के बहुत से लोग बैठे हुए थे । कोई रास्तागीर उधर से निकला, वह साधुजी के पास बैठ गया और इधर-उधर की बातें करने लगा । बातों ही बातों में साधु के प्रति उसने कुछ कड़ुवे और अपमानजनक शब्द कह दिये । इस पर साधु ने क्रुद्ध होकर श्राप दिया कि 'तू इसी समय अन्धा हो जायगा ।' वह अन्धा हो गया और एक सप्ताह तक वह पास के गाँव में लकड़ी के सहारे टटोलता और दुःख गाथा सुनाता फिरा । गाँव-गाँव जाकर वह यह कहता था कि पंच लोग चलकर महात्माजी को समझाकर श्राप वापस लेने को जोर दें तो ही उसका जीवन उबर सकता है । अन्धे पर दया करके करीब बीस गाँव के पंच इकट्ठे हुए । सबने बहुत विनय करके महात्माजी को मनाया । उनने कमण्डल से जल लेकर अन्धे पर डाला और उसकी आँखों में ज्योति वापस आ गयी । इस चमत्कार से ग्रमीण बहुत प्रभावित हुए । थोड़े दिन बाद बाबाजी ने भण्डारा करने की इच्छा प्रकट की जिसके लिये गाँवों से सैकड़ों रुपया प्राप्त हुआ ।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि जो आदमी अन्धा हुआ था वह आदमी बाबाजी का साथी था । साधक सिद्ध का जोड़ा बनाकर कितने ही स्थानों पर यह लोग इस घटना की पुनरावृत्ति कर चुके हैं ।

(३) एक गाँव में एक ठाकुर के कुँए के पास एक महात्मा जी आकर ठहरे । ठाकुर ने उनकी आवभगत की । जाते समय उन्होंने वरदान दिया कि तेरे इस कुए के जल का जो आचमन करेगा उसका कैसा ही कठिन या डरावना रोग क्यों न हो अच्छा हो जायगा । यह समाचार फैलते ही लोगों की भीड़ लगने लगी । एक अन्धा आदमी अच्छा हुआ, एक गूँगा बोलने लगा, यह घटना सबके सामने हुई । एक महीने तक भारी मेला उस कुँए पर लगा रहा । कथा-कीर्त्तन की धूम रही । ठाकुर ने घोषणा की कि महात्माजी

के आशीर्वाद रूपी इस कुँए को पक्का बनवाया जायगा और यहाँ एक धर्मशाला बनेगी, इसके लिये भेंट दक्षिणा दी जाय । बहुत रुपया जमा हुआ, कुँआ और धर्मशाला तो पक्के नहीं बने, पर ठाकुर का दरिद्र दूर हो गया ।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि जो अन्धे और बहरे अच्छे हुए थे वे बिल्कुल अच्छे-भले थे । ठाकुर चोरी करता था यह उसके दूरवर्ती साथी थे । जिन्हें वहाँ कोई जानता न था । बाद में इन्हीं लोगों को बीस-बीस कोस गाँवों में भेजा गया और इन लोगों ने अफवाह फैलाई कि अमुक स्थान पर महात्माजी के आशीर्वाद से ऐसा करामाती कुँआ निकला है जिससे पचासों अन्धे और हजारों बीमार अच्छे हो चुके हैं । यह अफवाह एक से दस और दस से सौ में फैल गई देहातों में ऐसी बातों पर विश्वास भी जल्दी हो जाता है । लोग वहाँ के लिये दौड़ पड़े । ठाकुर का पासा ठीक पड़ा, उसके पौ बारह हो गये ।

(४) मद्रास प्रान्त में एक जगह एक बड़ी कोठी में एक राजसी महात्मा रहते थे । वे श्रीकृष्णजी के प्रत्यक्ष दर्शन कराते थे । उनकी कोठी के भीतरी भाग में एक संगमरमर का छोटा-सा तालाब भरा रहता था । भगवान उस तालाब के जल में चलते-फिरते और हँसते-बोलते थे । रूप और सजावट बालक कृष्ण से मिलती-जुलती थी । धनी लोगों को बड़े नाज और नखरे के साथ बड़ी भक्तिपूर्वक दर्शन कराये जाते और लम्बी-लम्बी रकमें दान में ली जाती थीं ।

भेद खोजने पर मालूम हुआ कि तालाब का पेंदा मोटे किन्तु स्वच्छ काँच का बना हुआ है । उसके नीचे गुफा की तरह खाली जगह है । उस खाली जगह में जाने के लिये रास्ता है । एक सात-आठ वर्ष के स्वरूपवान बालक को वस्त्राभूषण से खूब सजाकर उस नीचे के तहखाने में भेज देते थे । लड़का उसमें इधर-उधर

फिरता था और दर्शकों की ओर हँसता-मुस्कराता तथा कुछ प्रसन्नता तथा कुछ आश्वासन सूचक शब्द कहता था। काँच के ऊपर पानी भरा रहने से यह दृश्य ऊपर से देखने पर ऐसा मालूम पड़ता था मानों जल में मछली की भाँति श्रीकृष्ण ही चल फिर रहे हों। भक्त लोग इस दृश्य को देखकर अपने को धन्य मान लेते थे और उस राजसी संत को भगवान का परम प्रिय समझकर उनके भी सदा के लिये भक्त बन जाते थे।

सं० २००४ के लगभग अनेकों व्यक्ति अपने आपको निष्कलंक भगवान का अवतार कहने लगे थे और इसके लिये उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। अब भी ऐसे तो कितने ही व्यक्ति हमारी नज़र में हैं जो अपने को प्रहलाद का, सूरदास का, शंकराचार्य का अवतार बताते हैं किन्तु सत्यता प्रकट करने के लिये एक भी तथ्य उनके पास नहीं है।

(५) एक योगिराज जलती हुई अग्नि पर स्वयं चलते थे और अपने पीछे-पीछे अन्य कई लोगों को चलाते थे, पर उनमें से कोई भी न जलता था। इस क्रिया में मुख्य बात यह थी कि जिसे अग्नि पर चलना होता था उसके पैर धुलाते थे गीले पैरों से अग्नि के निकट तक पहुँचने पर वह दवा पैरों में चिपट जाती थी जो यहाँ मिट्टी के ऊपर फैला दी जाती थी। इस दवा के प्रभाव से पैरों पर अग्नि का असर न होता था।

हमने उन योगिराज को चुनौती दी कि वे अग्नि के चारों ओर की जमीन भली प्रकार साफ कर लेने दें और पैर धुलाने के लिये जो पानी मँगाया जाय उसे लाने और देने का कार्य हमारे हाथ में रहे। यदि इस शर्त के साथ वे स्वयं अग्नि पर चलें या दूसरों को चलावें तो उन्हें पाँच सौ रुपया दक्षिणा देने को तैयार हैं, पर इस चुनौती को स्वीकार करने के लिये वे तैयार न हुए।

(६) एक जगह एक अवधूत देखे गये जो लोगों को माँगी

हुई चीजें तुरन्त अपने देवता द्वारा मँगा देते थे । उनके मुरीदों का कहना था कि उनको 'सेवड़े की विद्या' आती है । एक योगिनी उसके वश में है, उससे जो चाहते हैं सो मँगा लेते हैं ।

इस आश्चर्यजनक करतब का पता लगाने पर मालूम हुआ कि चीजें मँगाने का आग्रह उनके मुरीद लोग ही किया करते थे और वे चीजें पहले से ही मँगाकर तैयार रखी जाती थीं । बाजीगर जैसी सफाई से चीजें मँगाता और गायब करता है वैसी ही सफाई उनको याद थी, जिसके बल पर वे दर्शकों की माँगी हुई चीज आकाश की तरफ हाथ करके तुरन्त मँगा लेते थे । किसी नये आदमी को प्रभावित करना होता तो अपरिचित बनकर के मुरीद ही अवधूतजी से झगड़ते, चुनौती देते और ऐसी चीज माँगते जिसका उस समय वहाँ मिलना कठिन होता । अवधूतजी तुरन्त वह चीज मँगाकर उनकी बोलती बन्द कर देते । बेचारा नया दर्शक इस दृश्य को देखकर ही पूर्णतया संतुष्ट हो जाता । उसे स्वयं कुछ मँगाने के लिये कहने की नौबत ही न आ पाती ।

(७) एक पण्डित जी बड़े-बड़े यज्ञ करते थे । उनके यज्ञों में विशेषता यह होती थी कि यज्ञ कुण्ड में से मन्त्र द्वारा अग्नि अपने आप प्रकट होती थी । जनता पण्डितजी को बहुत पहुँचा हुआ सन्त मानती थी ।

भेद यह था कि हवनकुण्ड में रंग-बिरंगे चौक पूरे जाते थे । हल्दी, रोली, आटा आदि से उसे चित्र-विचित्र किया जाता था । सफेद रेखायें जहाँ बनायी जाती थीं वहाँ बारूद में काम आने वाली पुटास फैला दी जाती थी । थोड़ा-थोड़ा सफेद बूरा भी वहाँ बिछाया जाता था । पूजा की थाली में तीन-चार लौंगें तेजाब में डुबोकर पहले से ही रख ली जाती थीं । उंगलियों को घी में चुपड़ लिया जाता था ताकि तेजाब की डूबी हुई लौंगों के छूने से कोई हानि न हो ।

पण्डितजी मन्त्रोच्चारण करते थे और जब अग्नि प्रकट करने का अवसर आता था तो उन तेजाब में डूबी हुई लोगों को हवनकुण्ड में ऐसी जगह छोड़ते थे कि जहाँ पुटास और शक्कर बिछी रहती थी । तेजाब का स्पर्श होते ही बारूद जल उठती थी । बूरा उसके जलने में और भी सहायता देता था । कुण्ड में जहाँ-तहाँ कपूर छोड़ रखा जाता था, जो अग्नि को पकड़ लेता था और समिधायें जलने लगती थीं । इस प्रकार अग्नि देवता का मन्त्रबल से प्रकट करने का उन पण्डितजी को श्रेय मिल जाता था ।

निरर्थक मृगतृष्णा

जिन सिद्धियों के लिये लोग लालायित रहते हैं और अपनी व्यक्तिगत इच्छा और अभिलाषा के लिये उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं । उनके सम्बन्ध में आइये सार्वजनिक हित की दृष्टि से, बड़े दृष्टिकोण से विचार करें कि यदि सिद्धियाँ सर्वसुलभ हो जाँय तो संसार में सुविधा की वृद्धि होगी या असुविधा की । मान लीजिये कि अपने जीवन की अवधि लोगों को मालूम हो जाय, यह पता लग जाय कि हमारी मृत्यु, कब ? किस दिन ? किस प्रकार होगी ? तो उस मनुष्य का जीवन बड़ा विचित्र हो जायगा । अमुक दिन मरूँगा, इससे पहले नहीं मर सकता, यह निश्चित हो जाने पर वह बड़ी से बड़ी दुर्घटना करने के लिये, किसी से भी लड़ने-मरने के लिये तैयार हो जायगा । मृत्यु के डर से लोग आगा-पीछा सोचते हैं और संघर्ष में पड़ने से बचते रहते हैं, पर जो मरने से निधड़क हो गया हो उसे बड़े से बड़ा उत्पात करने में कुछ भय न होगा । दूसरी बात यह भी है कि जिसे मालूम है कि मेरी मृत्यु के समय में केवल इतना समय रहा है, वह सांसारिक काम धन्धों से उदास होकर बैठ जायगा । मृत्यु के शोक में बहुत पहले से डूब जायगा । किन्हीं बड़े कामों का आयोजन न करेगा । समाज में मित्रता और घनिष्ठता स्थापित न करेगा । अपने दीर्घ जीवन की आशा से लोग धन-वैभव

एकत्रित करते हैं । वह उसके मरने पर विधवा तथा बच्चों के काम आती है । जिसे मालूम है कि मुझे सिर्फ आठ महीने जीना है वह संपत्ति संचय न करेगा, जो होगी उसे भी खर्च कर देगा, ऐसी दशा में पीछे वालों को जो पैतृक धन से सहायता मिलती है, वह न मिला करेगी । जो जल्दी मरने वाला होगा उसका विवाह न होगा, बेचारा विवाह सुख से भी वंचित रह जायगा ! अधूरी उम्र के स्त्री–पुरुषों को दूसरा साथी न मिलेगा, उन्हें अविवाहित जीवन बिताना पड़ेगा । इस प्रकार एक नहीं हजारों प्रकार की कठिनाइयाँ बढ़ जायेंगी । यदि लोग अपना मृत्यु समय निश्चित रूप से जान लिया करें तो संसार का स्थिर रहना, उसकी कार्य प्रणाली चलना बड़ा कठिन हो जायगा ।

मान लीजिये कि व्यापार की तेजी–मन्दी का लोगों को पता चल जाय तो व्यापार का कारोबार ही ठप्प हो जायगा । जब लोगों को यह मालूम हो जाय कि अब तेजी आने वाली है तो पहले से ही लोग चीजों को रोक लेंगे और लोगों को वह वस्तु मिलना कठिन हो जायगी । इसी प्रकार यह मालूम हो जाय कि यह चीज मन्दी होने वाली है तो उसे बेचना तो सब चाहेंगे, लेगा कोई नहीं । जो वस्तु मन्दी होने वाली होगी उसका उत्पादन और आयात ही कोई न करेगा, फलस्वरूप उस वस्तु का मिलना दुर्लभ हो जायगा । सब लोगों को तेजी–मन्दी का पता चलने लगे तब तो व्यापार नाम की कोई वस्तु ही न रह जायेगी और तेजी मन्दी केवल शब्दकोषों में ही लिखी मिलेगी । इतना न भी हो, केवल किन्हीं एक–दो मनुष्यों को भी तेजी–मन्दी का ठीक ज्ञान हो तो वे एक दिन में अरबों–खरबों रुपया एकत्र कर सकते हैं । जिसे तेजी–मन्दी का ठीक ज्ञान होगा वह संसार की समस्त संपदा पर चन्द दिनों के अन्दर कब्जा कर लेगा । ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से संसार का साधारण क्रम बिल्कुल उलट–पुलट हो जायगा । परमात्मा अपनी दुनियाँ को इस प्रकार

उलट-पुलट नहीं करना चाहता । इसलिये उसने तेजी-मन्दी का सच्चा ज्ञान किसी ज्योतिषी, सटोरिये या सिद्ध को नहीं दिया है ।

इसी प्रकार जितनी भी सिद्धियाँ हैं वे यद्यपि आकर्षक दीखती हैं पर अन्ततः मनुष्य जाति के लिये घोर हानिकारक ही सिद्ध होंगी । इसलिये परमात्मा ने उन्हें सर्वसाधारण के लिये सुलभ नहीं किया है । जिन्हें वे सिद्धियाँ मिलती हैं वे वही लोग होते हैं जो पूर्ण परमात्म तत्त्व को प्राप्त कर लेते हैं और विश्व व्यवस्था में गड़बड़ करने के लिये उनका प्रयोग नहीं करते । इसलिये सिद्धियों के फेर में न पड़कर हमें स्वाभाविक सत्य, प्रेम, न्यायमय जीवन बिताना चाहिये । यही जीवन की सबसे बड़ी सफलता और परम सिद्धि है ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा